

MODERN INDIAN HISTORY

(UPPSC PRE & MAINS)

SHUBHAM GUPTA



हमारा पाठ्यक्रम (Our Curriculum)

- 1) आधुनिक भारत का इतिहास लेखन (Historiography of Modern India)
 - पुर्तगाली (1498) || Portuguese (1498)
 - डच (1605) || Dutch (1605)
 - अंग्रेज (1608) || English (1608)
 - डेनिश (1620) || Danish (1620)
 - फ्रांसीसी (1668) || French (1668)
- 2) भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Advent of European companies in India)
 - मैसूर (Mysore) :- चार आंग्ल मैसूर युद्ध (1768-99)
|| Four Anglo-Mysore Wars (1768-99)
 - मराठा (Maratha) :- तीन आंग्ल मराठा युद्ध (1775-1819) || Three Anglo-Maratha Wars (1775-1819)
 - सिंध (Sindh) :- 1843
 - पंजाब (Punjab) :- दो आंग्ल सिख युद्ध (1845-49)
|| Two Anglo-Sikh Wars (1845-49)
 - अवध (Oudh/Awadh) :- 1856
- 3) ब्रिटेन का साम्राज्यवादी विस्तार (British expansion in India)
 - बंगाल (Bengal) :- प्लासी (1757) और बक्सर (1764) का युद्ध ||
Battle of Plassey (1757) & Buxar (1764)

4) ब्रिटेन का साम्राज्यवादी विस्तार (Imperial Policies of Great Britain)

- ↳ लॉर्ड वेलेस्ली की सहायक संधि व्यवस्था (1798) || The Subsidiary Alliance by Lord Wellesley (1798)
- ↳ लॉर्ड डलहौजी का व्यपगत का सिद्धांत (1848) || Doctrine of lapse by Lord Dalhousie (1848)

5) ब्रिटिश कालीन आर्थिक नीतियां (British economic policies)

- ↳ भू राजस्व व्यवस्था (Land Revenue System)
- ↳ कृषि का वाणिज्यकरण (Commercialization of Agriculture)
- ↳ विऔद्योगिकरण (Deindustrialization)
- ↳ आधुनिक उद्योगों का विकास (Development of modern industries)
- ↳ रेलवे का विकास (Development of Railways)
- ↳ धन का निष्कासन (Drain of wealth)
- ↳ ब्रिटिश भारत में अकाल नीति (Famine Policy)

6) ब्रिटिश कालीन प्रशासनिक नीतियां (British administrative policies)

- ↳ सिविल सेवा (Civil Service)
- ↳ पुलिस (Police)
- ↳ न्याय व्यवस्था (Judicial System)
- ↳ सैन्य व्यवस्था (Military System)

7) ब्रिटेन की सामाजिक नीतियों (Social Policies of Britain)

- ↳ शिक्षा नीति (Education policy)
- ↳ समाज सुधार कानून (Social reform law)

8) भारतीय प्रतिक्रिया (Indian reaction)

- ↳ जनजातीय विद्रोह (Tribal Rebellion)
- ↳ किसान विद्रोह (Peasant Revolt)
- ↳ 1857 की क्रांति (Revolution of 1857)

9) भारतीय पुनर्जागरण (Indian Renaissance)

10) भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण (1858-1916) || First phase of national movement in India (1858-1916)

⇒ भारत में राष्ट्रवाद का उदय (The rise of nationalism in India)

⇒ कांग्रेस पूर्व प्रमुख संस्थाएं (Pre-Congress institutions)

⇒ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (Establishment of the Indian National Congress)

⇒ कांग्रेस का उदारवादी चरण (Moderate phase of Congress)

⇒ कांग्रेस का उग्रवादी चरण (The extremist phase of Congress)

⇒ होमरूल आंदोलन (Home Rule Movement)

11) भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण (1917-1942) || Second phase of national movement in India (1917-1942)

⇒ महात्मा गांधी का भारत आगमन (Arrival of Mahatma Gandhi in India)

⇒ महात्मा गांधी के आरंभिक आंदोलन (Early movements of Mahatma Gandhi)

⇒ खिलाफत आंदोलन (Khilafat Movement, 1919)

⇒ असहयोग आंदोलन (Non-cooperation Movement, 1920)

⇒ सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement, 1930)

⇒ भारत छोड़ो आंदोलन (Quit India Movement, 1942)

12) भारत में क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary movement in India)

- ⇒ क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण (First phase of revolutionary movement)
- ⇒ विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary movement abroad)
- ⇒ क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण (Second phase of revolutionary movement)

13) भारत की स्वतंत्रता और भारत का विभाजन (India's independence and partition of India)

- ⇒ सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज (Subhash Chandra Bose and Indian National Army)
- ⇒ लाल किला मुकदमा (The Red Fort trials, 1945)
- ⇒ नौसेना विद्रोह (Naval Mutiny, 1946)
- ⇒ भारत की स्वतंत्रता और विभाजन (Independence & partition of India)

14) स्वातंत्र्योत्तर भारत की प्रमुख घटनाएं (Major events of post-independence India)

- ⇒ भारत का एकीकरण (Unification of India)
- ⇒ संविधान का निर्माण (Formation of the Constitution)
- ⇒ राज्यों का पुनर्गठन (Reorganization of States)
- ⇒ जवाहरलाल नेहरू का कार्यकाल (Tenure of Jawaharlal Nehru)
- ⇒ लाल बहादुर शास्त्री का कार्यकाल (Tenure of Lal Bahadur Shastri)

अध्याय 01 : आधुनिक भारत का इतिहास लेखन

Chapter 01 : Historiography of Indian Nationalism

1) इतिहास का विभाजन
(Division of History)

2) इतिहास में समयरेखा (Time)

3) भारतीय इतिहास (Indian History)



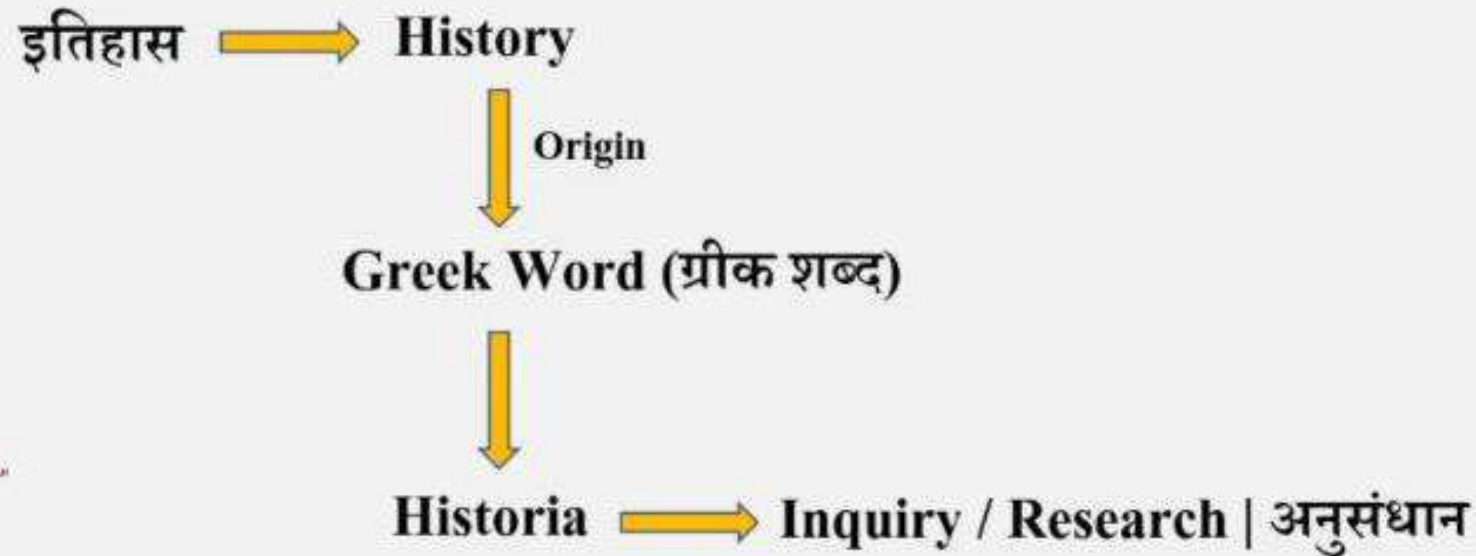
5) आधुनिक भारत का इतिहास
लेखन (Historiography of
Indian Nationalism)

4) उपनिवेशवाद (Colonialism)

History | इतिहास

- **History is the study of past in present for the better future** | वर्तमान और भविष्य के प्रकाश में अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं का अध्ययन

Etymology | शब्द-व्युत्पत्ति



History : Development as subject | इतिहास: विषय के रूप में विकास

484 BC → Greek → Herodotus | हेरोडोटस
यूनान

↓
Book - The Histories | हिस्टोरिका

↗ यूनान फारस युद्ध | Greco-Persian Wars.
↘ क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लेखन

↓
Father of History | इतिहास का पिता

411 BC → Greek → Thucydides | थ्यूसीदाइदीज
यूनान

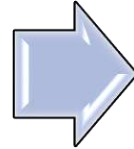
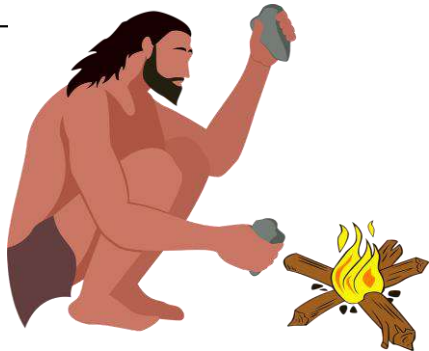
↓
Book - 'पेलोपोनेशियाई युद्ध का इतिहास'
History of the Peloponnesian War

↗ स्पार्टा और एथेंस के बीच युद्ध
↘ विश्लेषण तरीके से इतिहास लेखन

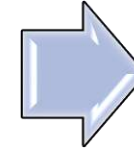
↓
Father of Scientific History | वैज्ञानिक इतिहास के पिता

1.1) Division of History

Pre-Historic Period : It is the period of human culture for which no written records are available. The history of this period is studied by archaeological evidences only. This period is divided into three parts viz. Palaeolithic Age, Mesolithic Age and Neolithic Age.



Proto-history Period : Protohistory is the period between prehistoric and modern history. Protohistoric period has a record of writings but it is not understood by the succeeding ages. Duration of this period is 2500 BC to 600 BC.

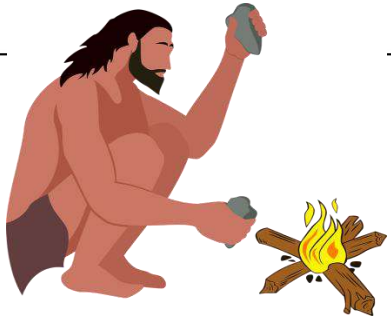


Historical Period : It is the period whose information is available in written records. Historical activities after 600 BC included in this period.



1.1) इतिहास का विभाजन

प्रागैतिहासिक काल : यह मानव संस्कृति का काल है जिसका कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। इस काल के इतिहास का अध्ययन पुरातात्विक साक्ष्यों से ही किया जाता है। इस काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है। पुरापाषाण युग, मध्यपाषाण युग और नवपाषाण युग।



आद्य-इतिहास काल : आद्य इतिहास प्रागैतिहासिक और आधुनिक इतिहास के बीच का काल है। आद्य-ऐतिहासिक काल में लेखों का रिकॉर्ड मौजूद है लेकिन बाद के युगों द्वारा इसे समझा नहीं जा सका। इस काल की अवधि 2500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व है।

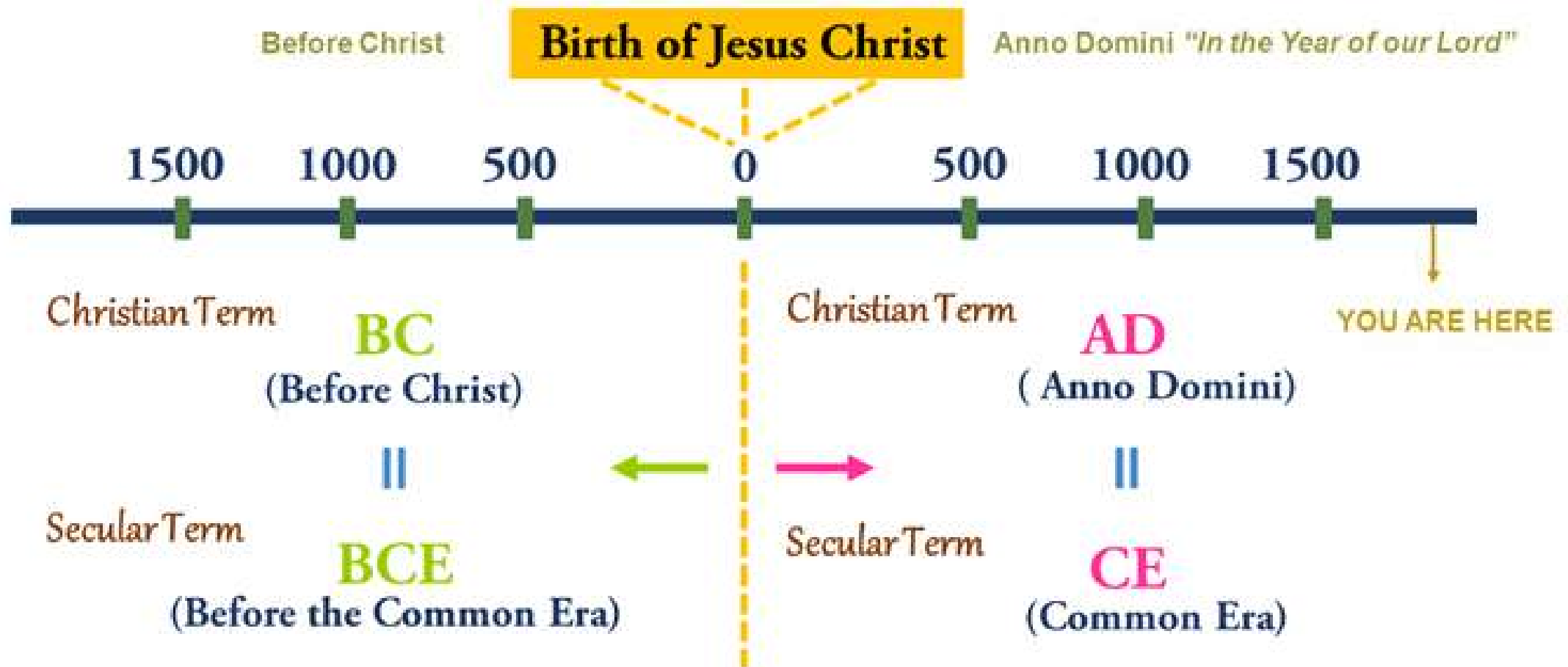


ऐतिहासिक काल : यह वह काल है जिसकी जानकारी लिखित अभिलेखों में उपलब्ध है। इस काल में 600 ईसा पूर्व के बाद की ऐतिहासिक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।



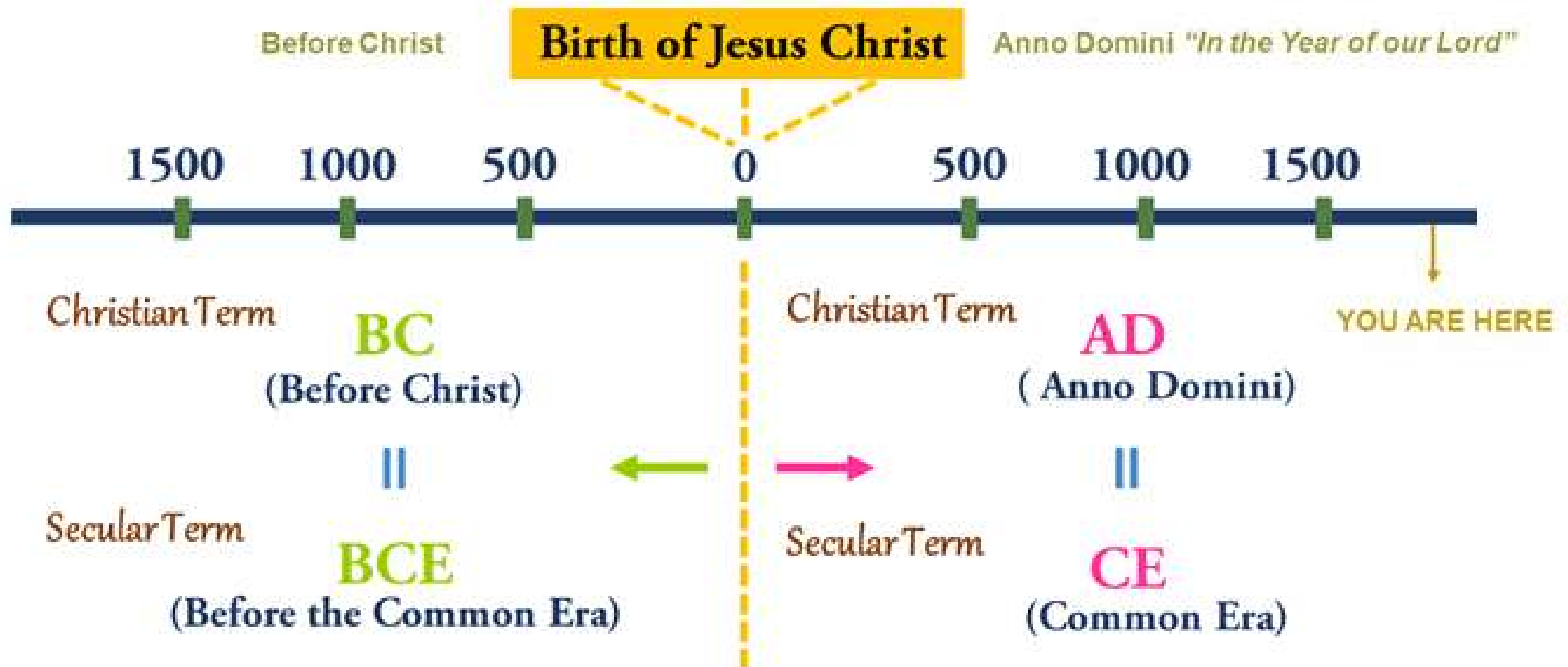
1.2) Timeline in History

BC/AD or BCE/CE (Historical Terms)



1.2) इतिहास में समयरेखा

BC/AD or BCE/CE (Historical Terms)



1.3) भारतीय इतिहास

प्राचीन भारतीय इतिहास
(प्रागैतिहासिक काल
- 712AD)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास
(712 AD – 1707 AD)

आधुनिक भारतीय इतिहास
(1707 AD – 1950 AD)

1) यूरोपीय कंपनियों का
आगमन तथा विस्तार

3) समाज सुधार
आंदोलन

5) भारत में गांधीवादी
आंदोलन

7) भारत की स्वतंत्रता
और पुनर्गठन

2) ब्रिटिश नीतियों तथा
आरंभिक विद्रोह

4) भारतीय राष्ट्रवाद
का उदय

6) भारत में क्रांतिकारी
आंदोलन

1.3) Indian History

```
graph TD; A[1.3) Indian History] --> B[History of ancient india<br/>(prehistoric times - 712AD)]; A --> C[Medieval Indian History<br/>(712 AD - 1707 AD)]; A --> D[Modern Indian History<br/>(1707 AD - 1950 AD)]; D --> E[1) Arrival and expansion of<br/>European companies]; D --> F[2) British policies and early<br/>rebellion]; D --> G[3) Social Reform<br/>Movement]; D --> H[4) rise of indian<br/>nationalism]; D --> I[5) Gandhian<br/>movement in<br/>India]; D --> J[6) Revolutionary<br/>movement in<br/>India]; D --> K[7) Independence and<br/>Reorganization of<br/>India];
```

**History of ancient india
(prehistoric times
- 712AD)**

**Medieval Indian History
(712 AD - 1707 AD)**

**Modern Indian History
(1707 AD - 1950 AD)**

**1) Arrival and
expansion of
European companies**

**2) British policies
and early
rebellion**

**3) Social Reform
Movement**

**4) rise of indian
nationalism**

**5) Gandhian
movement in
India**

**6) Revolutionary
movement in
India**

**7) Independence and
Reorganization of
India**

1.4) उपनिवेशवाद (Colonialism)

- 1) उपनिवेशवाद (Colonialism) :-** किसी एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आर्थिक विद्रोहन हेतु अधिकार करना (Captures someone else's territory not to merge it in form one larger entity but to have the captured territory as a separate entity called a colony and be exploited for economic and commercial purposes)
 - ↳ उपनिवेशवाद मूलतः एक आर्थिक संबंध होता है किंतु इसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव भी होते हैं (Colonialism is basically an economic relationship but it also has political, social and cultural effects)
- 2) नव उपनिवेशवाद (Neo-colonialism) :-** विकसित देश अपने राष्ट्रीय हितों हेतु विकासशील देशों के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप (Developed countries direct / indirect intervention in internal affairs of developing countries for their national interests)



1.4) Colonialism

- 1) **Colonialism** :- Captures someone else's territory not to merge it and form one larger entity but to have the captured territory as a separate entity called a colony and be exploited for economic and commercial purposes
 - ↳ Colonialism is basically an economic relationship but it also has political, social and cultural effects
- 2) **Neo-colonialism** :- Developed countries direct / indirect intervention in internal affairs of developing countries for their national interests



- 1) आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष || Anglo French conflict
- 2) प्लासी, बक्सर, मैसूर || Plassey, Buxar, Mysore
- 3) सहायक संधि || Subsidiary Alliance
- 4) व्यपगत सिद्धांत || Doctrine of Lapse

↑
4. साम्राज्यवाद || Imperialism



3. संस्कृति व शिक्षा || Culture & education



- 1) हस्तक्षेप व कानून || Intervention and law
- 2) अंग्रेजी शिक्षा || English education
- 3) मिशनरी || Missionary

2. विकास || Development

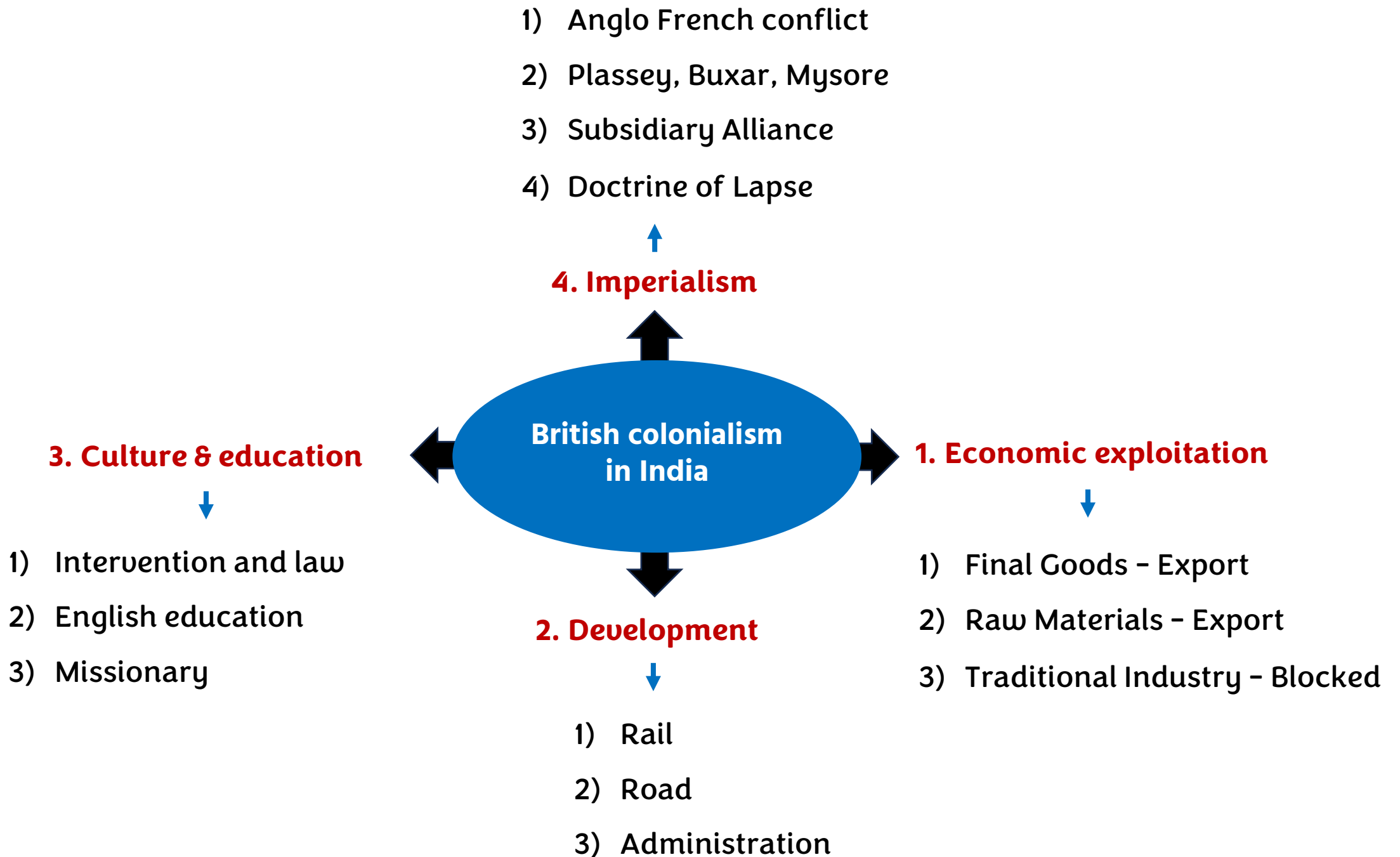


- 1) रेल || Rail
- 2) सड़क || Road
- 3) प्रशासन || Administration

1. आर्थिक शोषण || Economic exploitation



- 1) निर्मित वस्तुएं – निर्यात || Final Goods - Export
- 2) कच्चे माल – निर्यात || Raw Materials - Export
- 3) पारम्परिक उद्योग – अवरुद्ध || Traditional Industry - Blocked



1.5) आधुनिक भारत का इतिहास लेखन (Historiography of Indian Nationalism)



1) साम्राज्यवादी उपागम (कैम्ब्रिज उपागम) :-

- **प्रमुख इतिहासकार** - कूपलैण्ड, पर्सिवल स्पीयर, अनिल सील, जुडिथ ब्राउन।
- भारत को अवरुद्ध एवं पिछड़े समाज के रूप में चित्रित किया
- ब्रिटेन को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया
- ब्रिटेन द्वारा किये गए भारत के औपनिवेशकरण को उचित ठहराया
- भारत एक राष्ट्र नहीं वरन एक भौगोलिक इकाई मात्र था
- इनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन एक अभिजात गुट का दूसरे अभिजात गुट के विरुद्ध संघर्ष था। जिसमें स्थानीय, प्रांतीय व अखिल भारतीय स्तर पर नेता रूपी दलाल थे

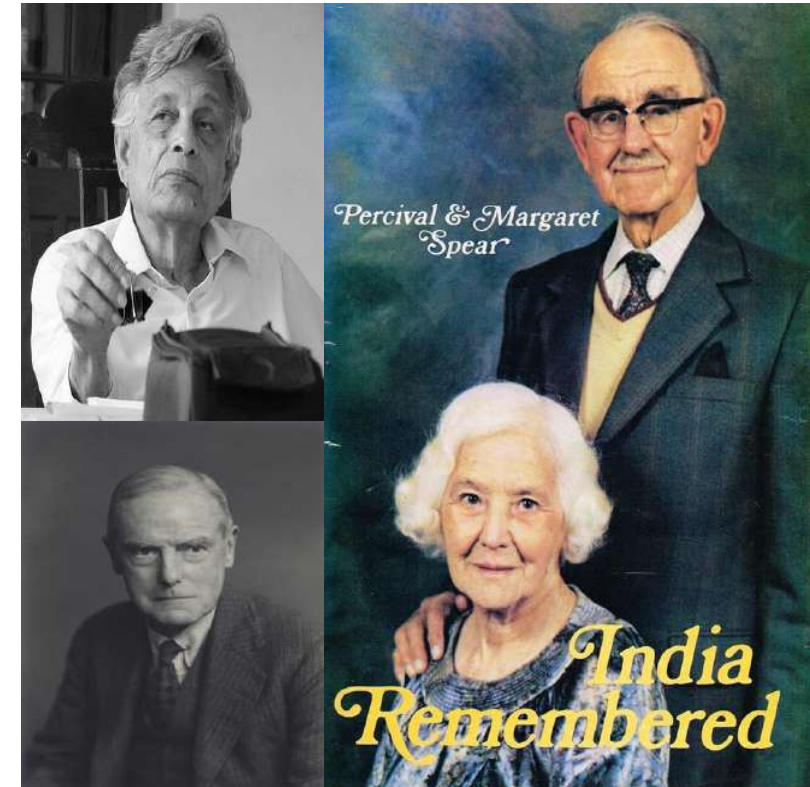


1.5) Historiography of Indian Nationalism



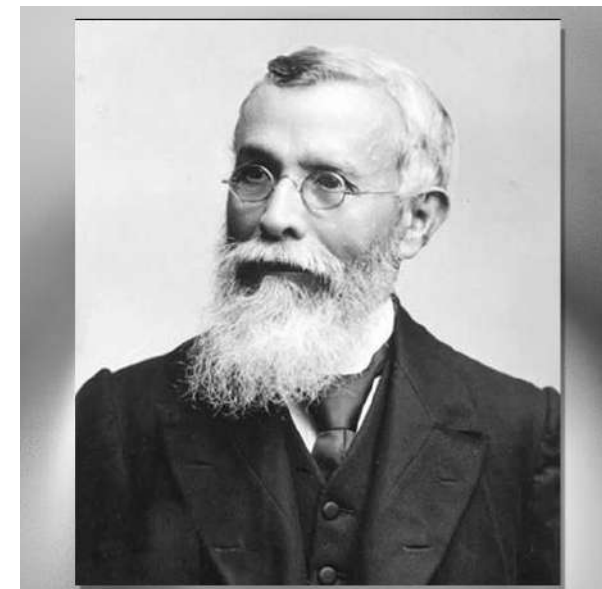
1) Imperialist approach (cambridge approach) :-

- **Leading historian** - Coupland, Percival spear, Anil seal, Judith brown.
- Portrayed India as a backward and backward society.
- Presented Britain in a glorious light
- Justified the colonization of India by Britain
- India was not a nation but only a geographical unit.
- According to him, the national movement was a struggle of one elite group against another elite group. In which there were brokers in the form of leaders at local, provincial and all india level.



2) राष्ट्रवादी उपागम :-

- **इतिहासकार** - लाला लाजपत राय, रमेश चंद्र मजूमदार, बाल गंगाधर तिलक, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, दयानंद सरस्वती, तारा चंद, बल राम नंदा
- ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषक तत्वों को उजागर किया
- राष्ट्रीय आंदोलन, औपनिवेशिक शासन का परिणाम
- **कमी** - उनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन, सभी भारतीयों के हितों का समान रूप से प्रतिनिधित्व करता है
- **परिणाम** - भारत में राष्ट्रवाद का विकास

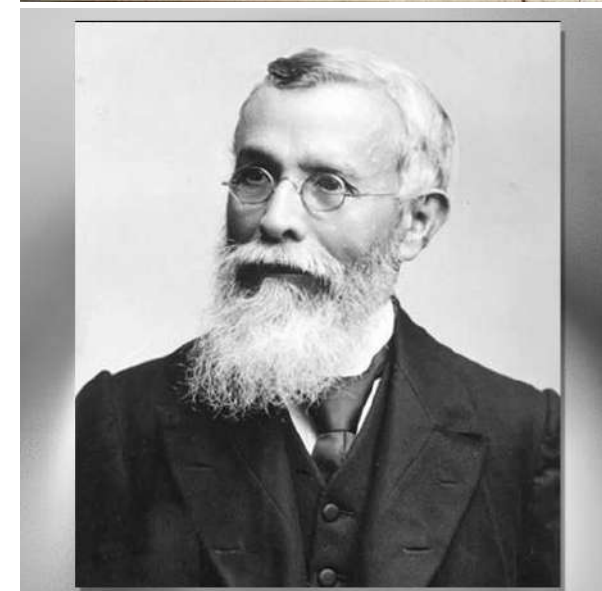


Surendranath Banerjee



2) Nationalist approach :-

- **Historian** - lala lajpat rai, ramesh chandra majumdar, bal gangadhar tilak, surendra nath banerjee, dayanand saraswati, tara chand, bal ram nanda
- Exposed the exploitative elements of british colonialism
- National movement, result of colonial rule
- **Shortcoming** - according to him, the national movement represents the interests of all indians equally.
- **Result** - development of nationalism in india

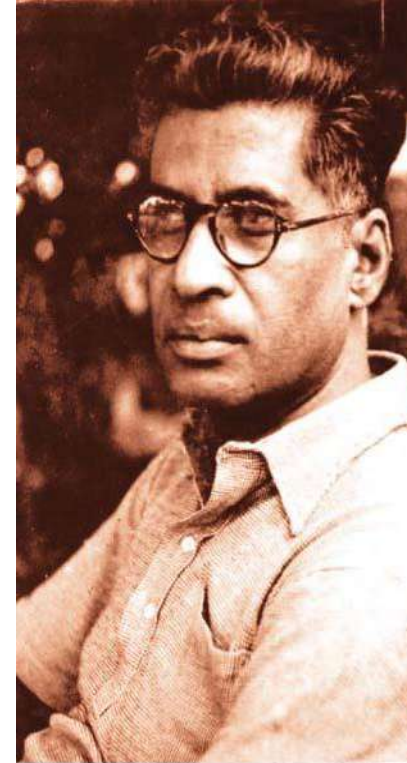


Surendranath Banerjee



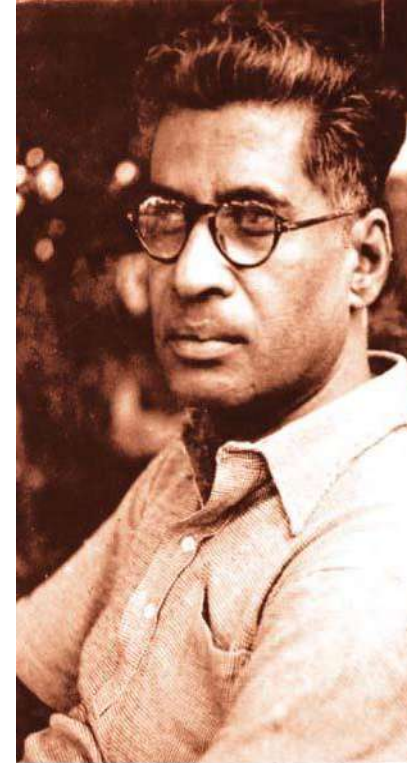
3) मार्क्सवादी उपागम :-

- ✍ **इतिहासकार** - रजनी पाम दत्त, अक्षय रमणलाल देसाई, प्रोफेसर बिपिन चन्द्र, मानवेन्द्रनाथ राय आदि
- ✍ भारतीय इतिहास की सामाजिक व वर्गीय व्याख्या प्रस्तुत की
- ✍ आरंभिक मार्क्सवादी इतिहासकार जैसे रजनी पाल्मे दत्त ने राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक संघर्ष माना
 - उनके अनुसार, राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व बुर्जुआ वर्ग ने अपने संकीर्ण हितों को पूरा करने हेतु किया, जबकि कृषक, मजदूर व अन्य बड़े समूहों के हितों की अनदेखी हुई
- ✍ हालांकि कालांतर में विपिन चन्द्र जैसे इतिहासकारों ने एक बेहतर व संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।
 - विपिनचन्द्र के अनुसार भारत में दो विरोधाभास थे - **प्राथमिक व द्वितीयक**
 - ⦿ प्राथमिक - भारतीय जनमानस व ब्रिटिश शासन के मध्य
 - ⦿ द्वितीयक - भारतीय जनमानस के मध्य
 - विपिन चन्द्र के अनुसार, द्वितीय विरोधाभास कमजोर हो गया तथा प्राथमिक विरोधाभास मजबूत होता गया, जिसका परिणाम भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन था



3) Marxist approach :-

- **Historian** - rajni pam dutt, akshay ramanlal desai, professor bipin chandra, manvendra Nath Rai etc.
- Presented social and class interpretation of Indian history
- Early Marxist historians like Rajni Palme Dutt considered the national movement as a social struggle.
 - According to him, the national movement was led by the bourgeoisie to fulfill its narrow interests, while the interests of farmers, laborers and other large groups were ignored.
- However, with time, historians like Bipin Chandra adopted a better and balanced approach.
 - ❑ According to Bipin Chandra, there were two contradictions in India - **primary and secondary**.
 - ⊙ Primary - between the Indian people and the British rule
 - ⊙ Secondary - among the Indian public
 - ❑ According to Bipin Chandra, the secondary contradiction weakened and the primary contradiction became stronger, the result of which was the Indian national movement.



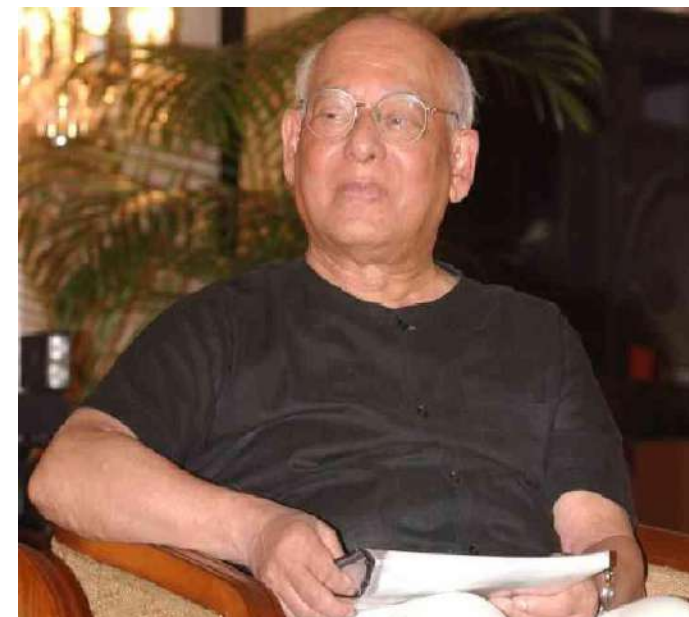
4) सबाल्टर्न या उपाश्रयवादी उपागम :-

- उपाश्रयवादी उपागम के संस्थापक रंजीत गुहा को माना जाता है
- 1980 में स्थापित इस दृष्टिकोण को पार्थ चटर्जी, ज्ञानेंद्र पांडेय, रितु मेनन आदि ने आगे बढ़ाया

➤ विशेषताएँ -

- ⊙ इस दृष्टिकोण के अनुसार चाहे वो साम्राज्यवादी इतिहास लेखन हो अथवा मार्क्सवादी या राष्ट्रवादी इतिहासलेखन, सभी एक समान दोष के शिकार हैं। ये सभी दृष्टिकोण राष्ट्रीय आंदोलन में नेताओं की भूमिका को अधिक करके दर्शाते हैं जबकि किसी भी आंदोलन में जनसामान्य नेतृत्व को दिशा देता न कि नेतृत्व जनसामान्य को।
- ⊙ इन्होंने इतिहास के विश्लेषण में नेतृत्व की भूमिका की जगह सामाजिक प्रक्रिया पर अधिक बल दिया है।

- **परिणाम -** इस दृष्टिकोण ने जनजाति और किसान आंदोलन के अध्ययन में विशेष योगदान दिया है तथा प्रत्येक आंदोलन में निचले स्तर के दबाव को दर्शाने का प्रयास किया है।



4) Subaltern approach :-

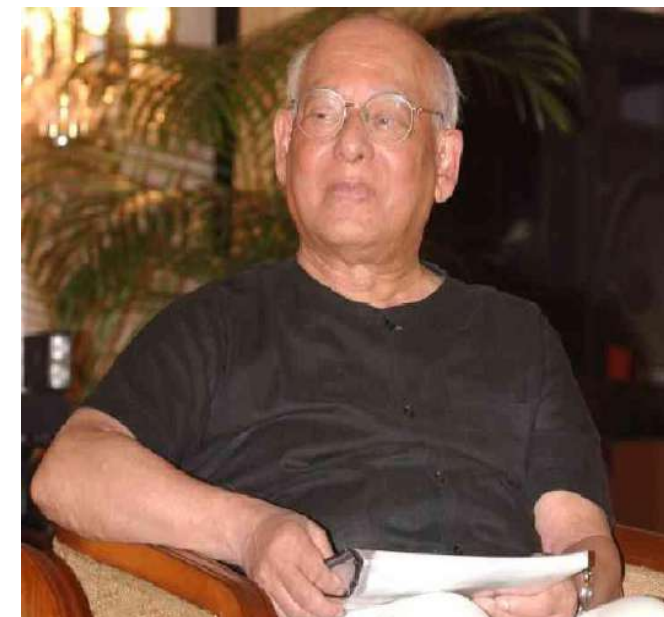
➤ Ranjit guha is considered to be the founder of the sub-dependent approach.

➤ This approach established in 1980 was carried forward by partha chatterjee, gyanendra pandey, ritu menon etc.

➤ Features -

- ⊙ According to this point of view, whether it is imperialist historiography or marxist or nationalist historiography, all are victims of the same flaw. All these viewpoints exaggerate the role of leaders in the national movement whereas in any movement the masses give direction to the leadership and not the leadership to the masses.
- ⊙ In the analysis of history, he has given more emphasis on social process rather than the role of leadership.

➤ **Result** - this approach has made a special contribution to the study of tribal and peasant movements and has tried to show the pressure at the grassroots level in each movement.



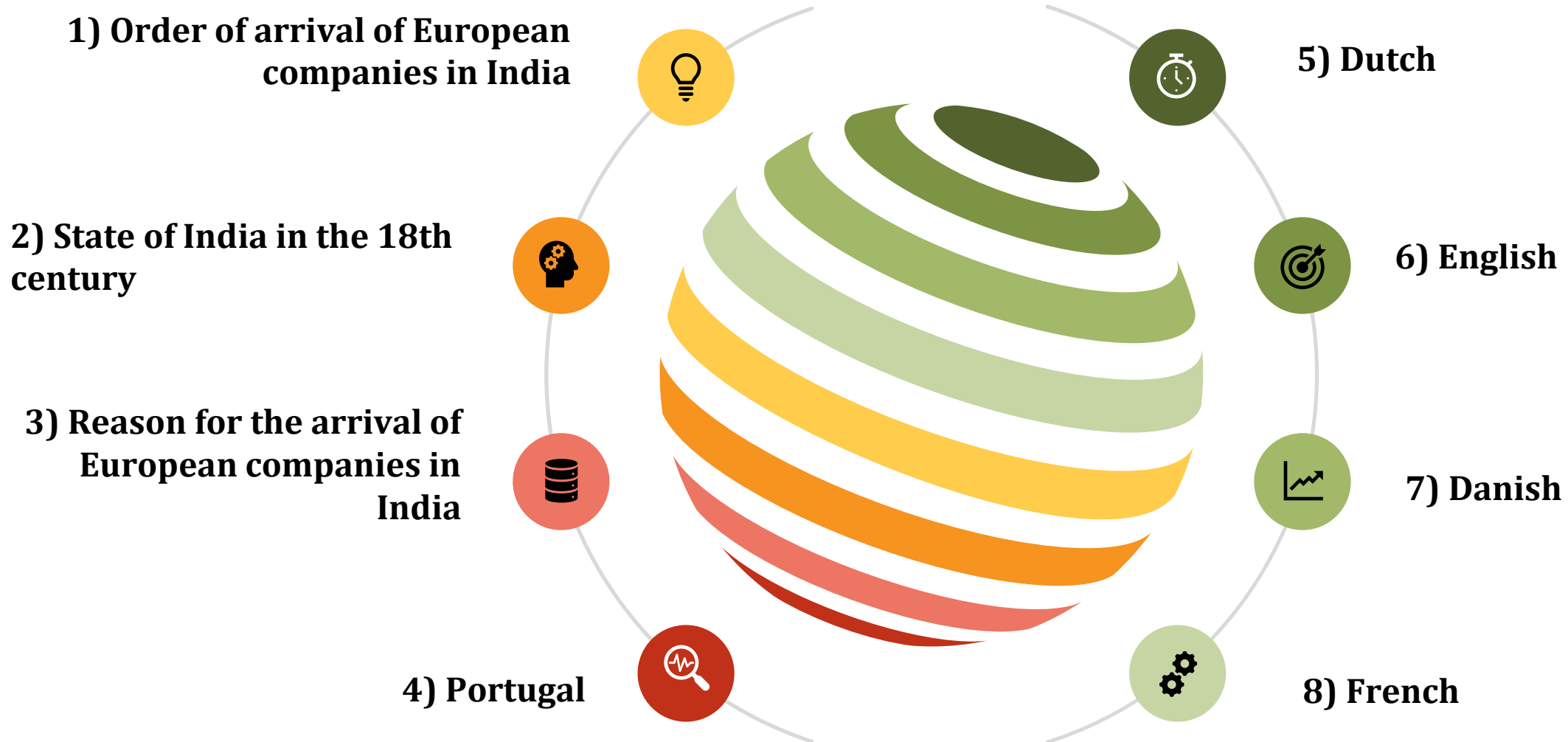
अध्याय – 02 || Chapter - 02

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन || Advent of European companies in India

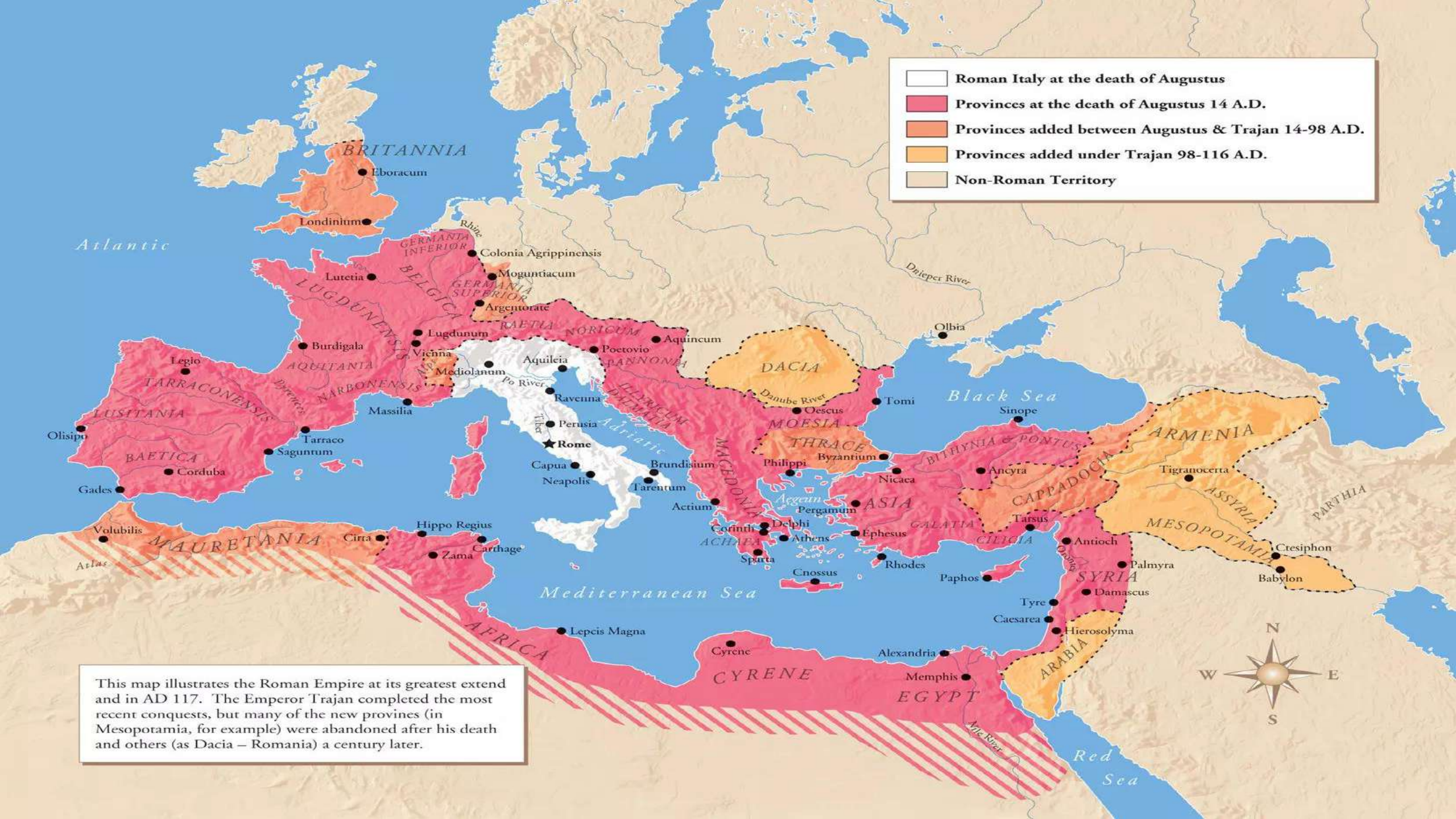


Chapter - 02

Advent of European companies in India







Roman Italy at the death of Augustus

Provinces at the death of Augustus 14 A.D.

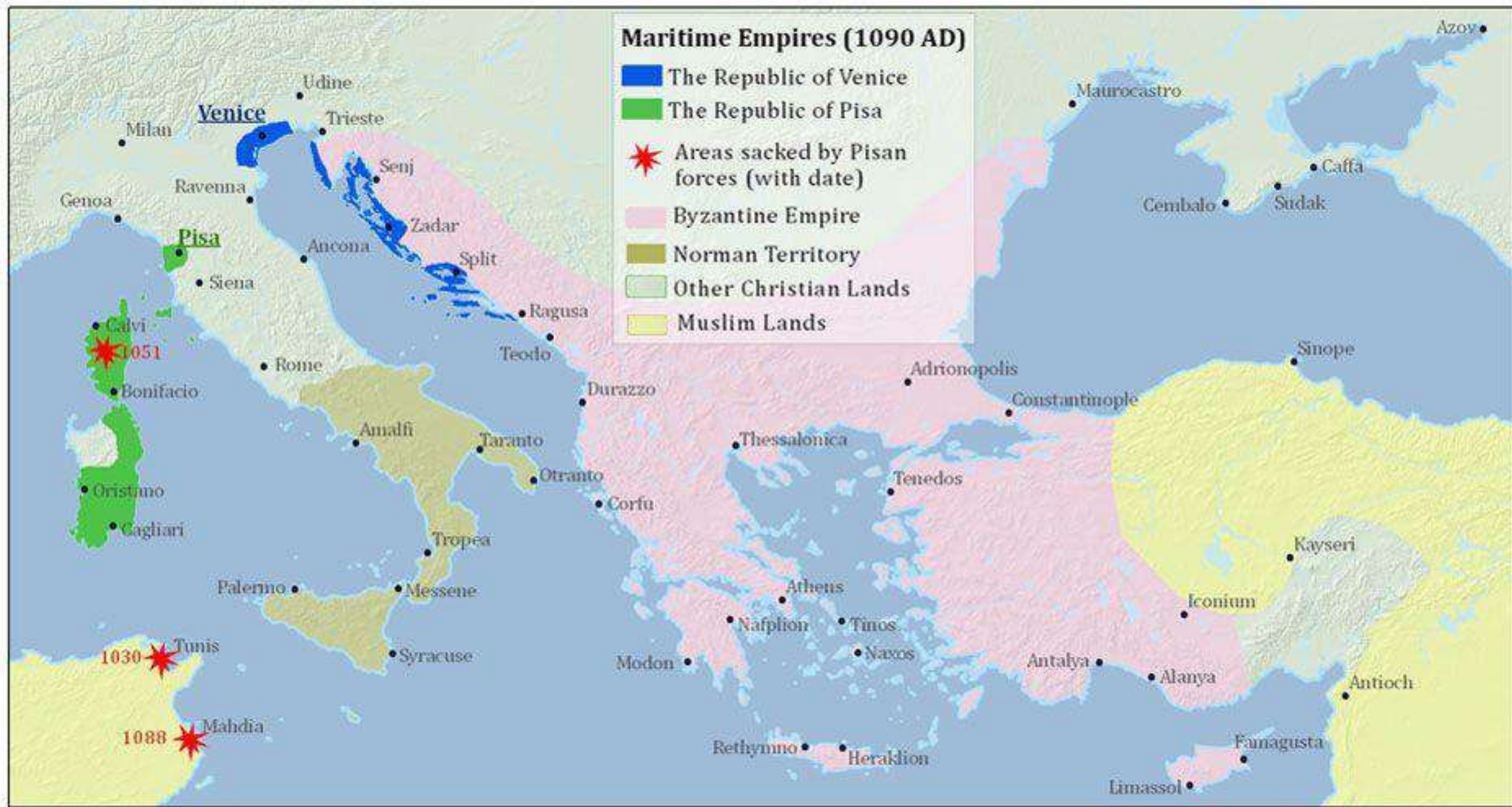
Provinces added between Augustus & Trajan 14-98 A.D.

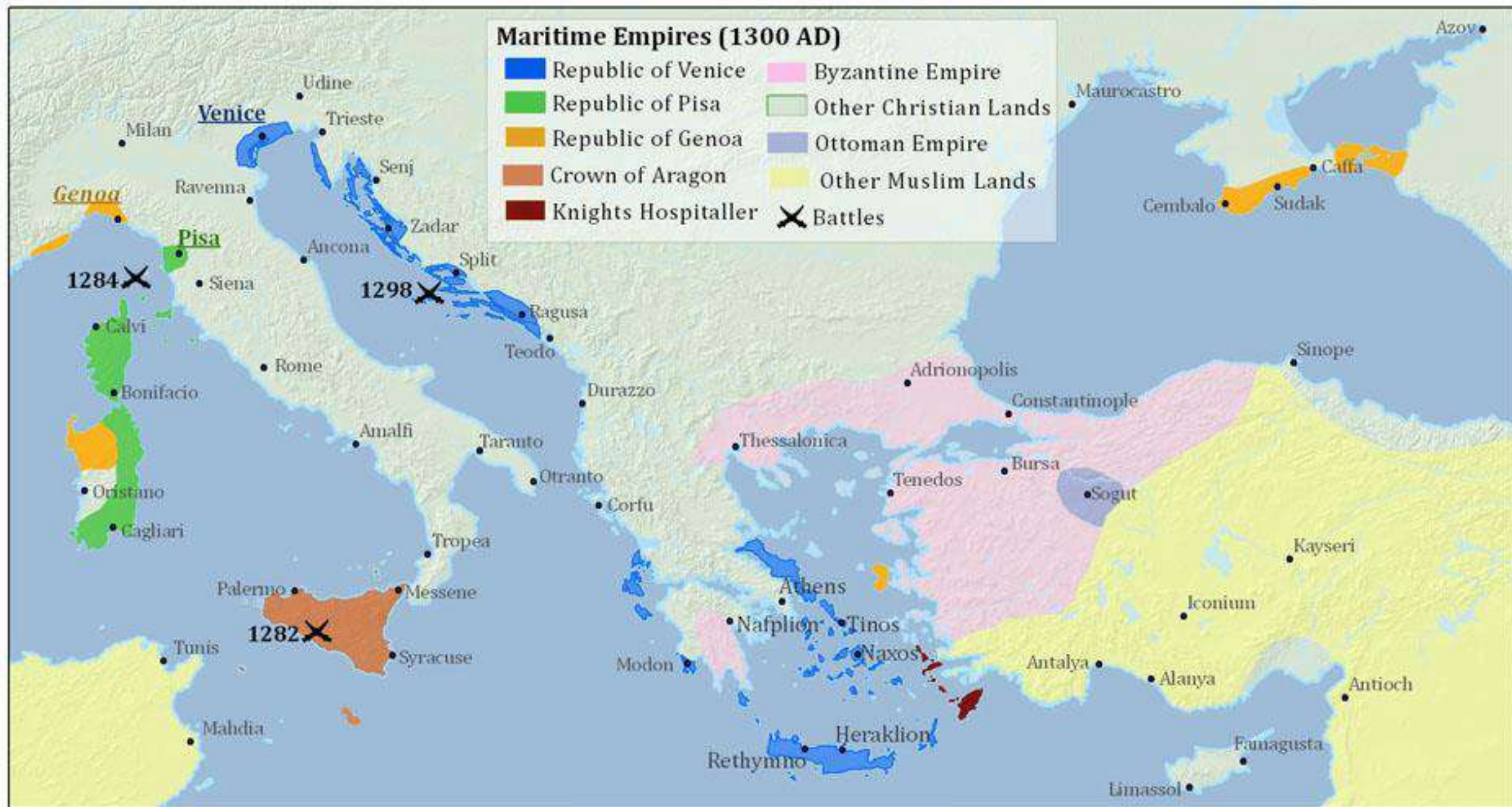
Provinces added under Trajan 98-116 A.D.

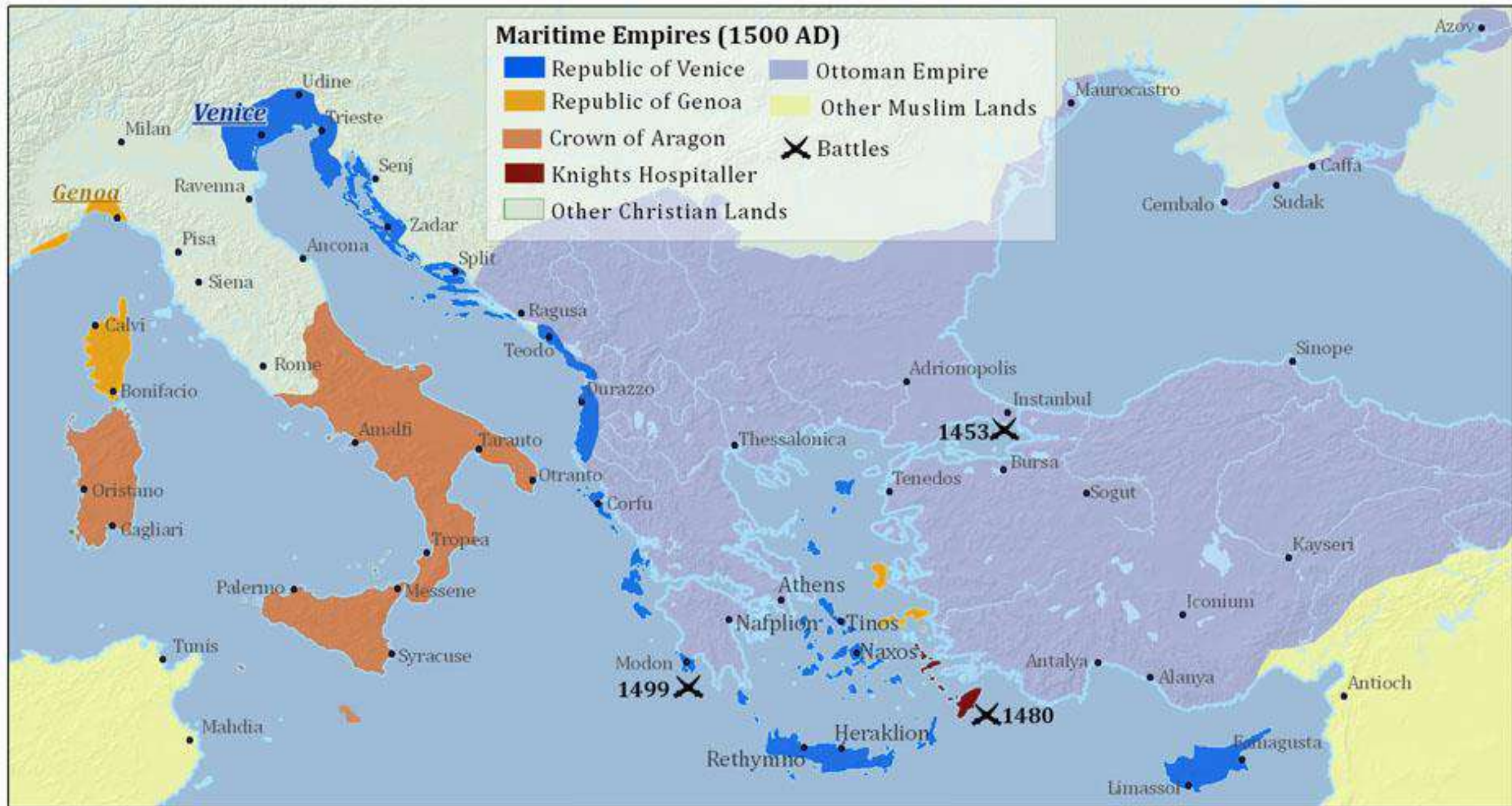
Non-Roman Territory

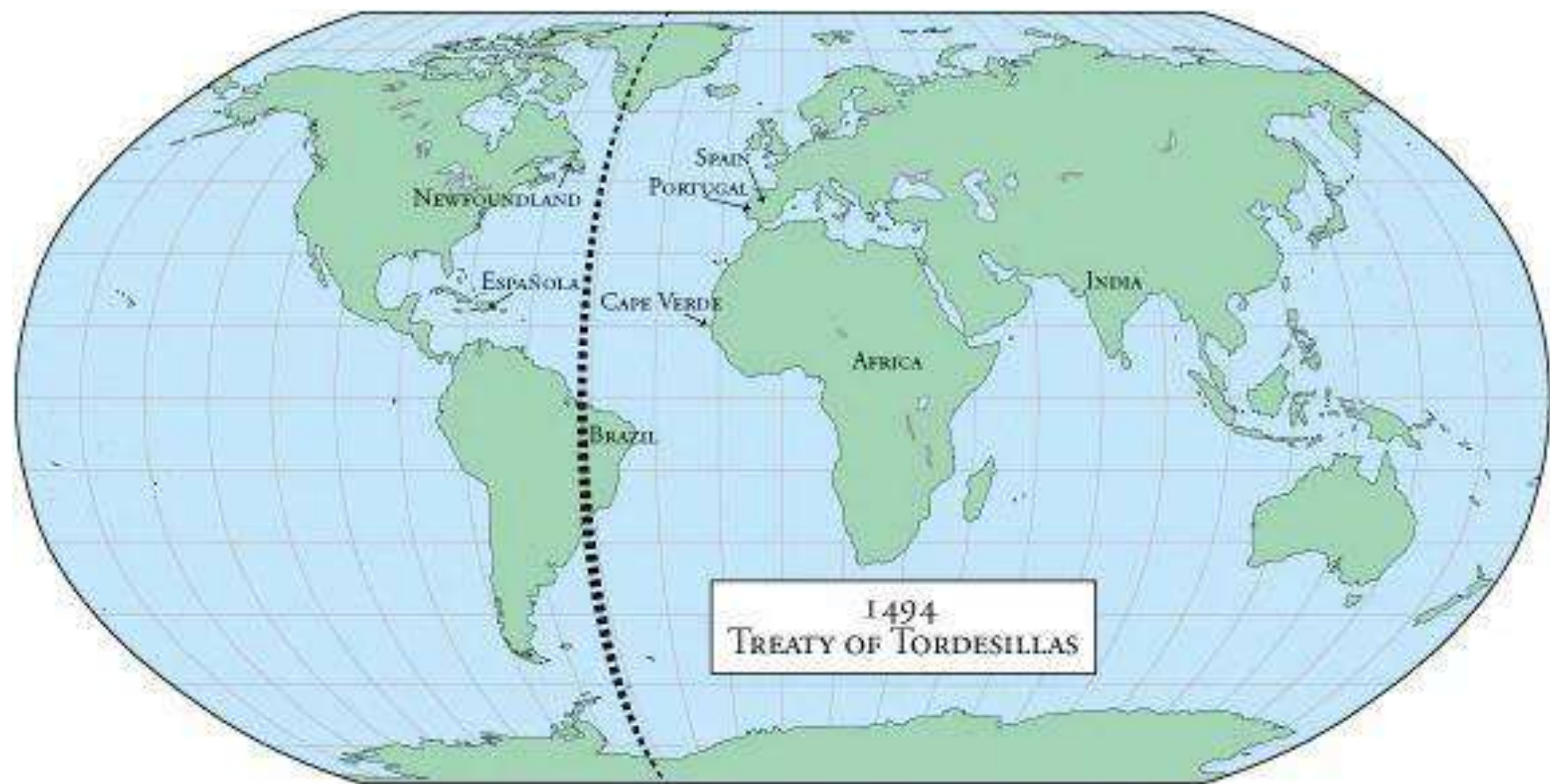
This map illustrates the Roman Empire at its greatest extent and in AD 117. The Emperor Trajan completed the most recent conquests, but many of the new provinces (in Mesopotamia, for example) were abandoned after his death and others (as Dacia – Romania) a century later.

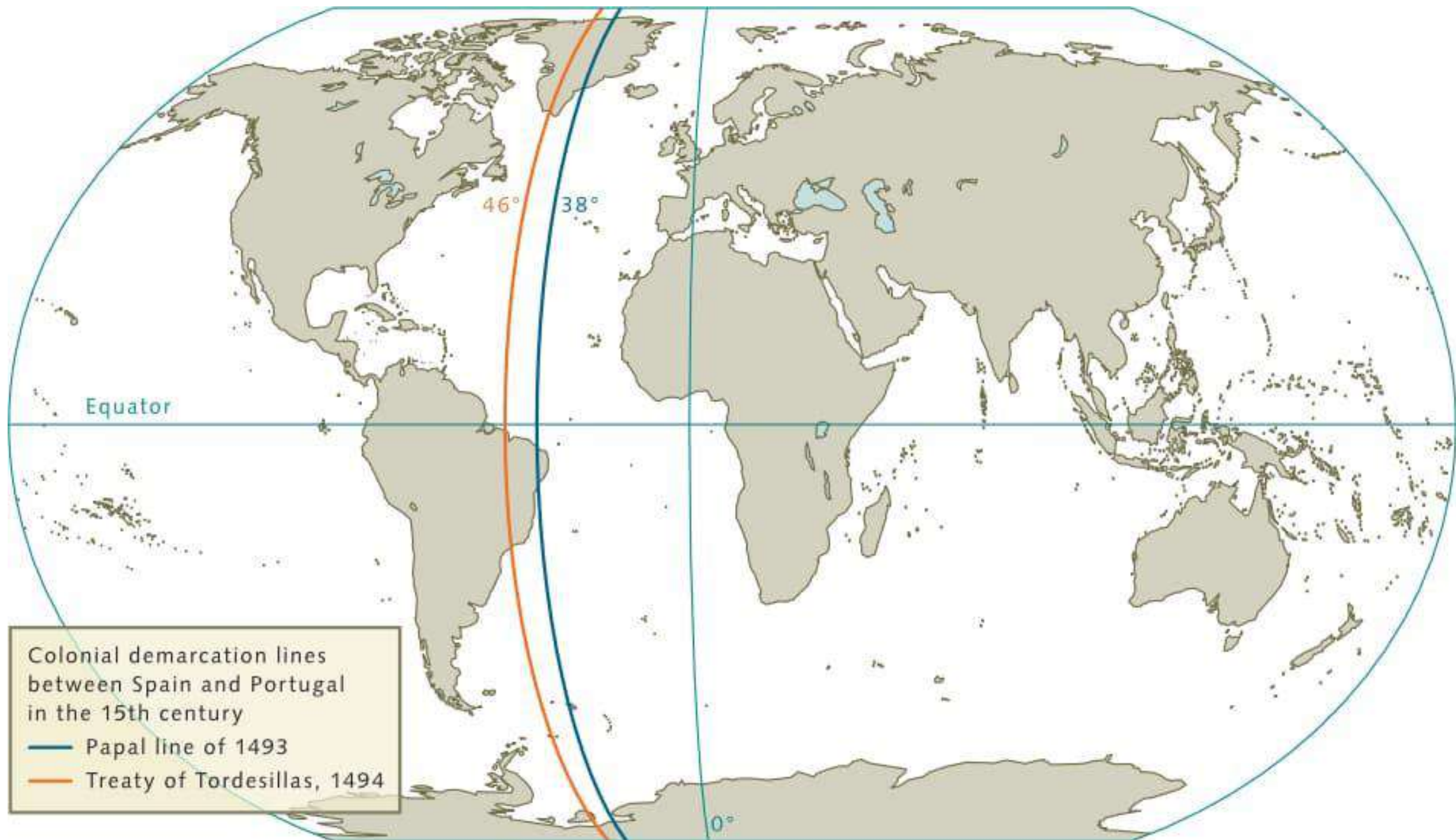












Tracking the trade Winds

EXPRESS
research

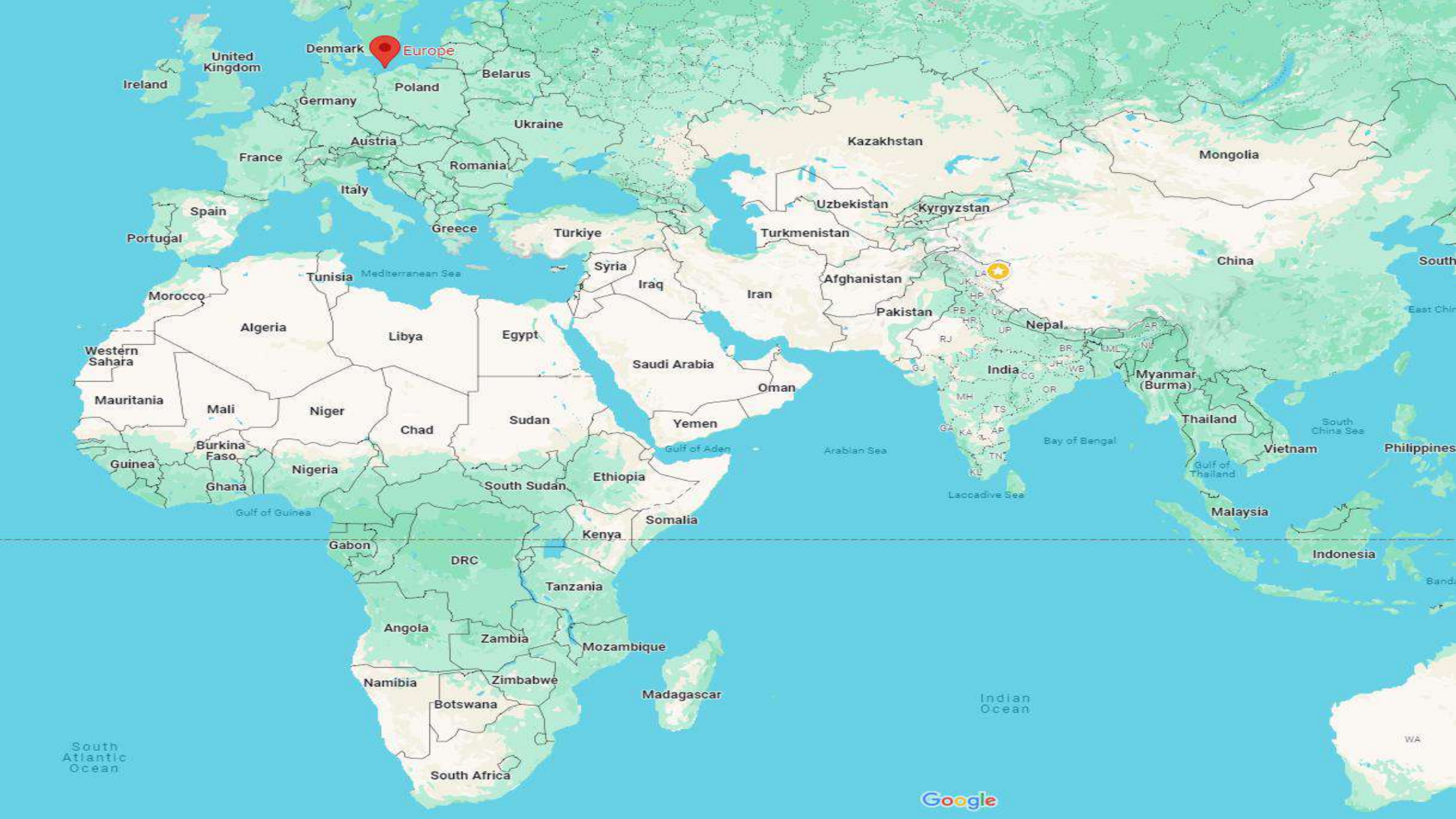


British route

Arab route

Dutch route

- Amsterdam to Malabar
- London to Surat
- Malabar to Egypt



1) भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का क्रम Order of arrival of European companies in India

आगमन || Arrival

पुर्तगाली 1498
Portuguese 1498

डच 1605
Dutch 1605

अंग्रेज 1608
English 1608

डेनिश 1620
Danish 1620

फ्रांसीसी 1668
French 1668

स्थापना || Establishment

**एस्तादो द इंडिया (पुर्तगाली
कंपनी) 1498**

**ब्रिटिश ईस्ट इंडिया
कंपनी, 1600**

**वेरिंगदे ओस्त इंडिशे
कंपनी (डच ईस्ट
इंडिया कंपनी), 1602**

**डेनिश ईस्ट इंडिया
कंपनी, 1616**

**कंपने देस इंदेस
ओरियंतलेस (फ्रांसीसी
कंपनी), 1664**

संभवत मध्य युग की किसी भी अन्य घटना का सभ्य संसार पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना कि भारत जाने के समुद्री मार्ग खुल जाने से - डाडवेल

1) Order of arrival of European companies in India

Arrival

Portuguese 1498

Dutch 1605

English 1608

Danish 1620

French 1668

Establishment

**Estado the India
(Portuguese Company)
1498**

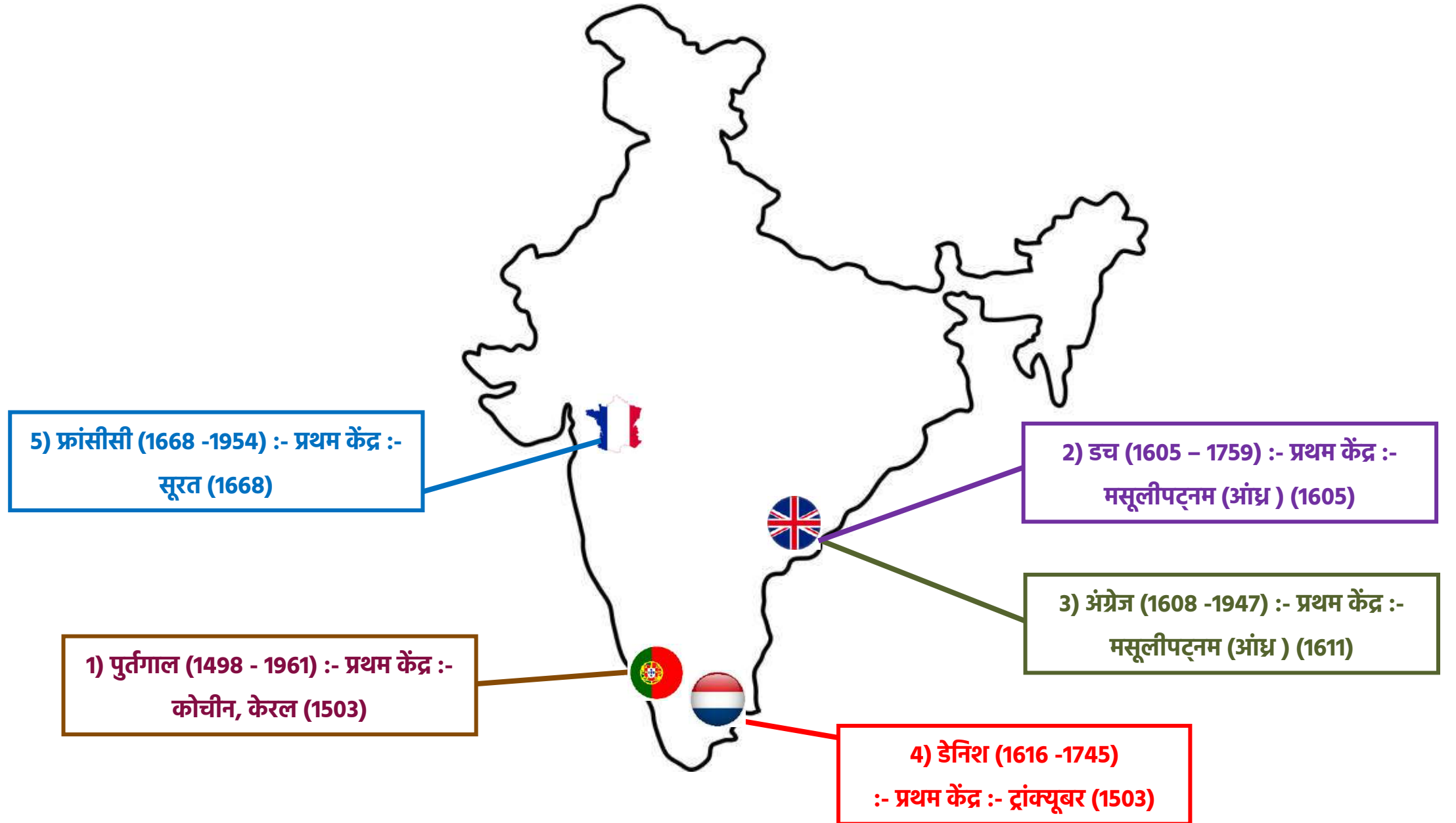
**British East India
Company, 1600**

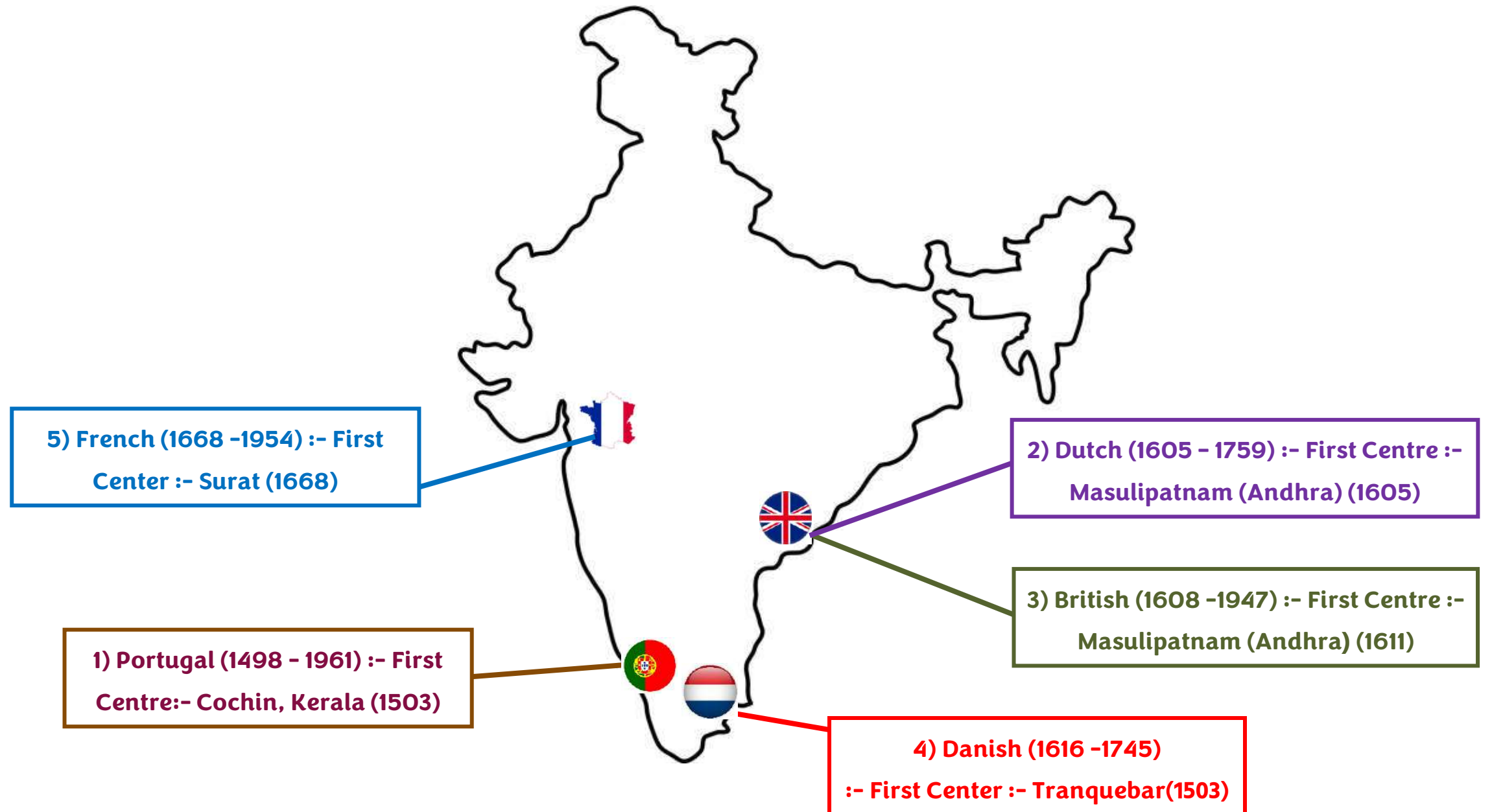
**Veringde Ost
Indische
Company (Dutch
East India
Company), 1602**

**Danish East India
Company, 1616**

**Company des
Indes Orientales
(French
Company), 1664**

Perhaps no other event of the Middle Ages had as much impact on the civilized world as the opening of sea routes to India - Dodwell





2) 18वीं सदी में भारत की अवस्था Condition of India in the 18th century

18 वीं शताब्दी से पूर्व यूरोपीय जातियों ने भारत में व्यापारिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया. हालांकि 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में कर्नाटक, बंगाल आदि में राजनीतिक हस्तक्षेप प्रारंभ किया जिसका कारण निम्नलिखित तत्कालीन स्थितियां थीं :-

1) राजनीतिक परिस्थितियां

- मुगल साम्राज्य का पतन
- नवीन राज्यों (बंगाल, हैदराबाद, अवध) का उदय
- नवीन शक्तियों (मराठा, राजपूत, सिरत , जाट) का उदय
- केंद्रीय शक्ति का अभाव व राजनैतिक विखराव

2) आर्थिक परिस्थितियां

- विश्व की सर्वाधिक समृद्ध अर्थव्यवस्था
- फसलें – चावल, गेहूं, कपास, नील, अफीम आदि
- विश्व का 25% औद्योगिक उत्पादन – कपड़ा, जहाज निर्माण, जूट, शक्कर, तेल आदि
- 1700 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 24% योगदान से 1947 में मात्र 4.2%

2) Condition of India in the 18th century

Before the 18th century, European races concentrated on trading activities in India. However, in the second half of the 18th century, political intervention was started in Karnataka, Bengal etc., due to the following conditions at that time :-

1) Political conditions

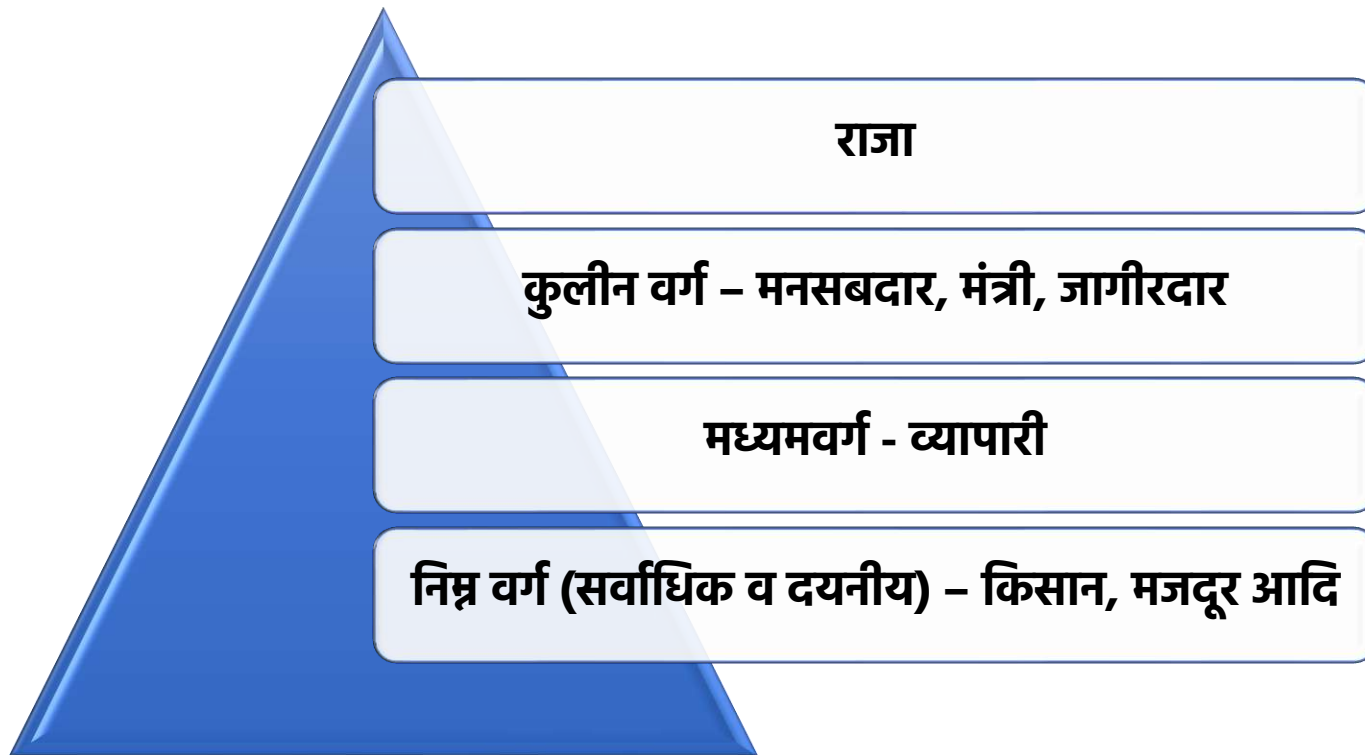
- Fall of the Mughal Empire
- Rise of new states (Bengal, Hyderabad, Oudh)
- Rise of new powers (Marathas, Rajputs, Sirats, Jats)
- Lack of central power and political disintegration

2) Economic conditions

- World's richest economy
- Crops – Rice, Wheat, Cotton, Indigo, Opium etc.
- 25% of the world's industrial production – textiles, shipbuilding, jute, sugar, oil etc.
- From 24% contribution to the global economy in 1700, only 4.2% in 1947

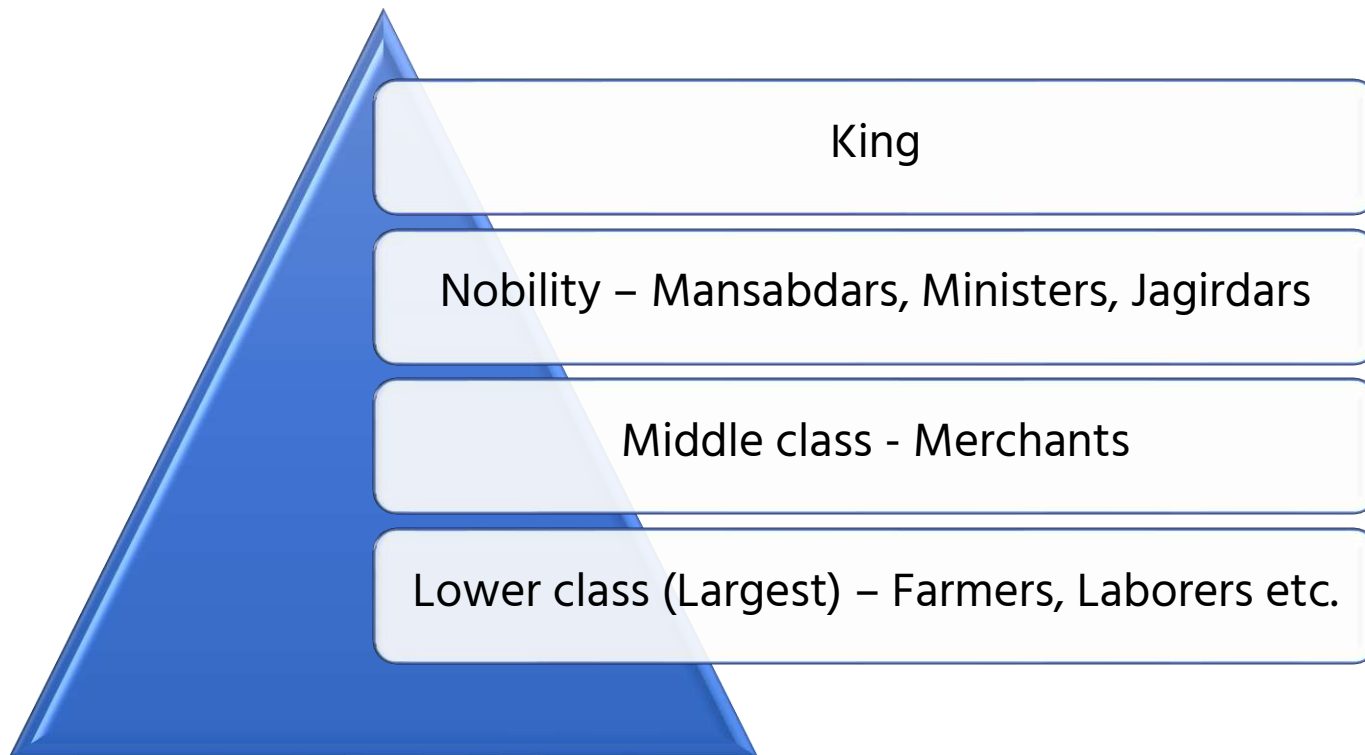
3) सामाजिक परिस्थितियां

- वर्ण व्यवस्था,
- वर्ण आधारित भेदभाव, बाल विवाह, जाति व्यवस्था
- सती प्रथा, बहु विवाह, महिला शिक्षा का अभाव
- पदानुक्रम :-



3) Social conditions

- Varna system,
- Varna based discrimination, child marriage, caste system
- Sati system, polygamy, lack of female education
- Hierarchy :-



3) भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का कारण

Reason for the advent of European companies in India

प्राचीन काल से ही भारत और यूरोप के मध्य व्यापारिक संबंध स्थापित थे, हालांकि नवीन समुद्री मार्ग द्वारा यूरोपीय कंपनियों के भारत आने के निम्नलिखित कारण थे :-

- 1) मांस संरक्षण हेतु यूरोप में भारतीय मसाले की अत्यधिक मांग।
- 2) मार्को पोलो जैसे यात्रियों के द्वारा लिखे गए वृत्तांत से यूरोप में पूर्व की संपदा के प्रति आकर्षण में वृद्धि।
- 3) 1453 में तुर्की सुल्तानों ने एशिया माइनर को जीतकर कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया, परिणामस्वरूप पूर्व और पश्चिम के बीच के पुराने व्यापारिक मार्ग तुर्कों के नियंत्रण में आ गए। इसके अलावा यूरोप और एशिया के व्यापार पर वेनिस और जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार था और वे पश्चिमी यूरोप के नए राष्ट्रों (स्पेन और पुर्तगाल) को इसमें भागीदार नहीं बनाना चाहते थे। इसलिए पश्चिमी यूरोप के देश भारत और इंडोनेशिया के स्पाइस आइलैंड (मसाले के द्वीप) के नए समुद्री मार्गों की तलाश करने लगे।
- 4) इन सब के अलावा 14वीं शताब्दी में यूरोप में होने वाले निम्नलिखित आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों ने यूरोपीय कंपनियों के आगमन की पृष्ठभूमि को तैयार किया :-

❁ पश्चिमी यूरोप में सामंतवाद व्यवस्था के पतन के साथ-साथ राष्ट्रीय राज्यों का उद्भव

2) Reason for the advent of European companies in India

Trade relations were established between India and Europe since ancient times, however, the following were the reasons for European companies coming to India through the new sea route :-

- 1) Indian spices are in high demand in Europe for meat preservation.
- 2) The accounts written by travelers like Marco Polo increased Europe's fascination with the wealth of the East.
- 3) In 1453 the Turkish sultans conquered Asia Minor and took control of Constantinople, resulting in the old trade routes between East and West falling under the control of the Turks. Apart from this, the merchants of Venice and Geneva had authority over the trade of Europe and Asia and they did not want the new nations of Western Europe (Spain and Portugal) to be partners in it. Therefore, the countries of Western Europe started looking for new sea routes to India and the Spice Islands of Indonesia.
- 4) Apart from all this, the following economic, social, political and cultural changes taking place in Europe in the 14th century prepared the background for the arrival of European companies. :-
 - 🌸 The emergence of national states along with the decline of the feudal system in Western Europe

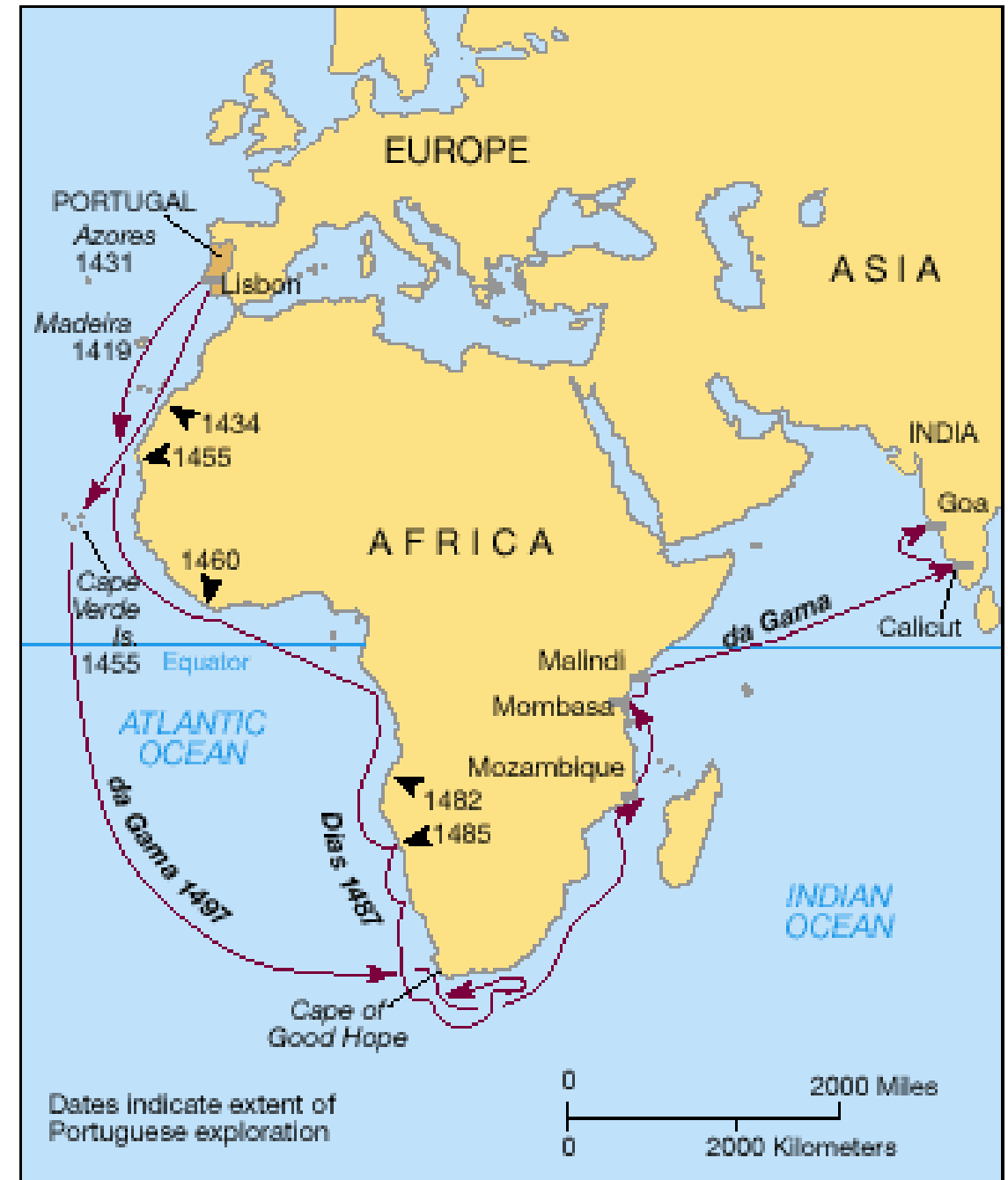
- ❁ सामंती अर्थव्यवस्था के स्थान पर वणिकवादी अर्थव्यवस्था का उदय, वणिकवाद के एक ऐसी विचारधारा है जो सरकारी संरक्षण के द्वारा कीमती धातुओं के संग्रह तथा निर्यात के प्रोत्साहन पर बोल देती है।
- ❁ यूरोप का पुनर्जागरण तथा प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार आंदोलन। यूरोप में पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप तार्किक, वैज्ञानिक तथा मानवीय दृष्टिकोण में बढ़ोतरी हुई। जिसके परिणाम स्वरूप नौ परिवहन व अन्य क्षेत्रों में नवीन तकनीकी आविष्कार हुए। उदाहरण के लिए एस्ट्रोलैब ने दिशा सूचक यंत्र का विकास किया तथा साहसी नविको ने तोपयुक्त मज़बूत जहाजों का निर्माण किया।
- ❁ ईसाई धर्म के वैश्विक प्रचार की महत्वाकांक्षा
- ❁ नवीन पूंजीवाद की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कच्चे माल तथा अंतिम उत्पादों हेतु नए बाजारों की आवश्यकता।
- ❁ पुर्तगाल के प्रिंस हेनरी (द नेविगेटर), क्रिस्टोफर कोलंबस, बार्थोलोम्यु डियास, वास्कोडिगामा जैसे साहसी नविको तथा शासकों की उपस्थिति

इस प्रकार, पुनर्जागरण का अभ्युदय, कृषि में निवेश कम लाभ वाला सिद्ध होना, कच्चे माल की आवश्यकता, नवीन बाजारों की प्राप्ति एवं विस्तार, पूर्व की धन-संपदा का आकर्षण, ईसाई मत के प्रसार की उत्कट इच्छा एवं यूरोप में पुरातन व्यवस्था (सामंतवाद) के स्थान पर नवीन व्यवस्था (पूंजीवाद) के स्थापित होने के कारणों ने भारत में यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने कालांतर में भारत की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन किया।

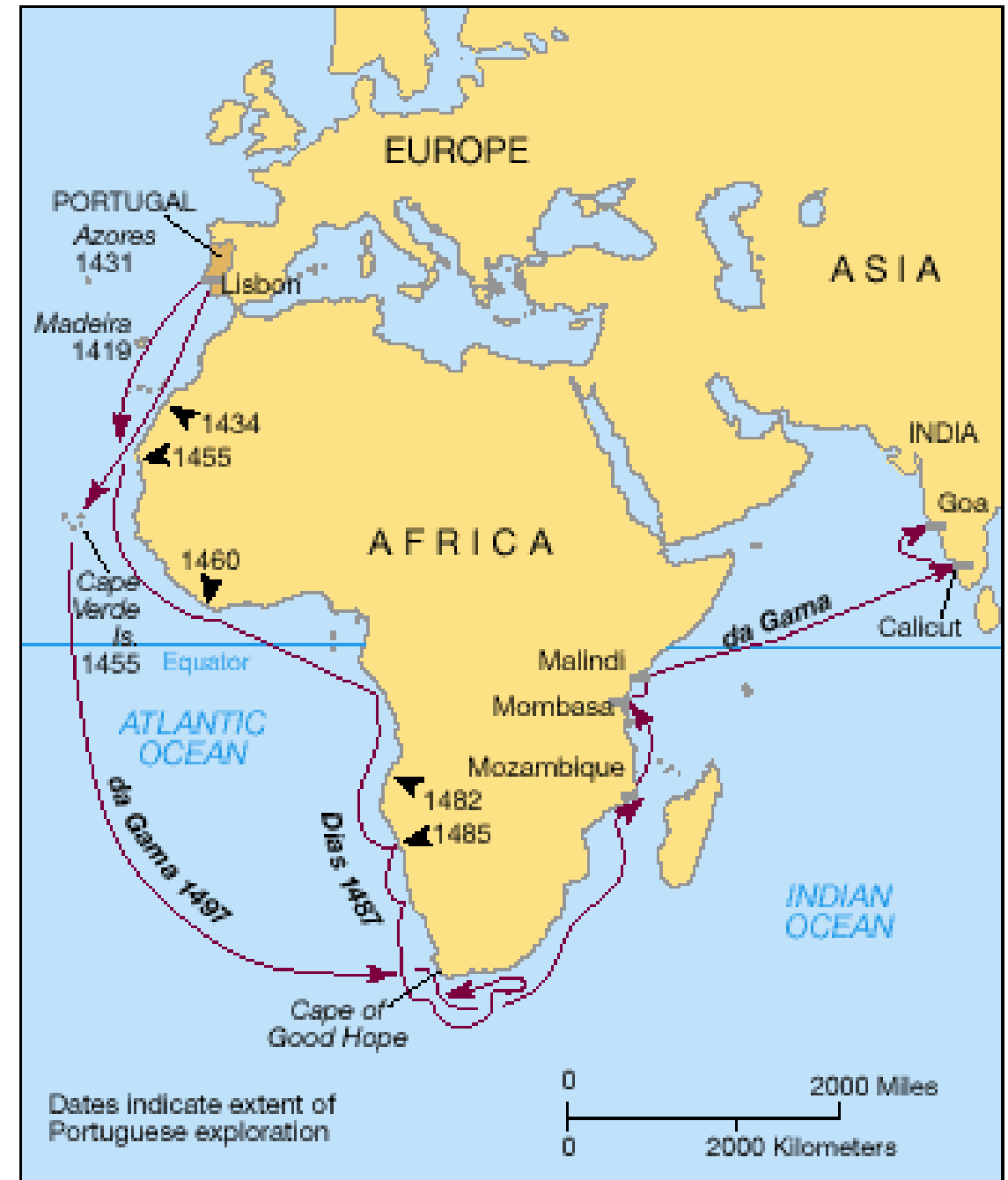
- ❁ The emergence of a mercantilist economy in place of a feudal economy is an ideology of mercantilism that advocates the promotion of accumulation and export of precious metals through government patronage.
- ❁ The Renaissance and the Protestant Reformation in Europe. The Renaissance in Europe resulted in an increase in logical, scientific and humanistic attitudes. As a result, new technological inventions were made in transport and other fields. For example, the astrolabe developed the compass and adventurous sailors built strong ships equipped with cannon.
- ❁ Ambition for global spread of Christianity
- ❁ The need for new markets for raw materials and final products to meet the needs of new capitalism.
- ❁ Presence of courageous sailors and rulers like Prince Henry of Portugal (The Navigator), Christopher Columbus, Bartholomew Dias, Vasco da Gama

Thus, the emergence of Renaissance, investment in agriculture proving to be less profitable, the need for raw materials, the discovery and expansion of new markets, the attraction of the wealth of the East, the keen desire to spread Christianity and the old system (feudalism) in Europe. The reasons for the establishment of a new system (capitalism) in its place paved the way for the arrival of European colonial powers in India, which over time brought about radical changes in the social, economic and political system of India.

- ब्राज़ील (पेद्रो अल्वारेस कैब्रल, 1500)
- अमेरिका (1492, क्रिस्टोफर कोलंबस, इटली और स्पेन)
- भारत (1498, वास्को डी गामा, पुर्तगाल)
- ऑस्ट्रेलिया (जेम्स कुक, यूके और विलेम जंज़ून, हॉलैंड)
- न्यूज़ीलैंड (हाबिल तस्मान, हॉलैंड)



- Brazil (Pedro Álvares Cabral, 1500)
- America (1492, Christopher Columbus, Italy & Spain)
- India (1498, Vasco da Gama, Portugal)
- Australia (James Cook, UK & Willem Janszoon, Holland)
- New Zealand (Abel Tasman, Holland)



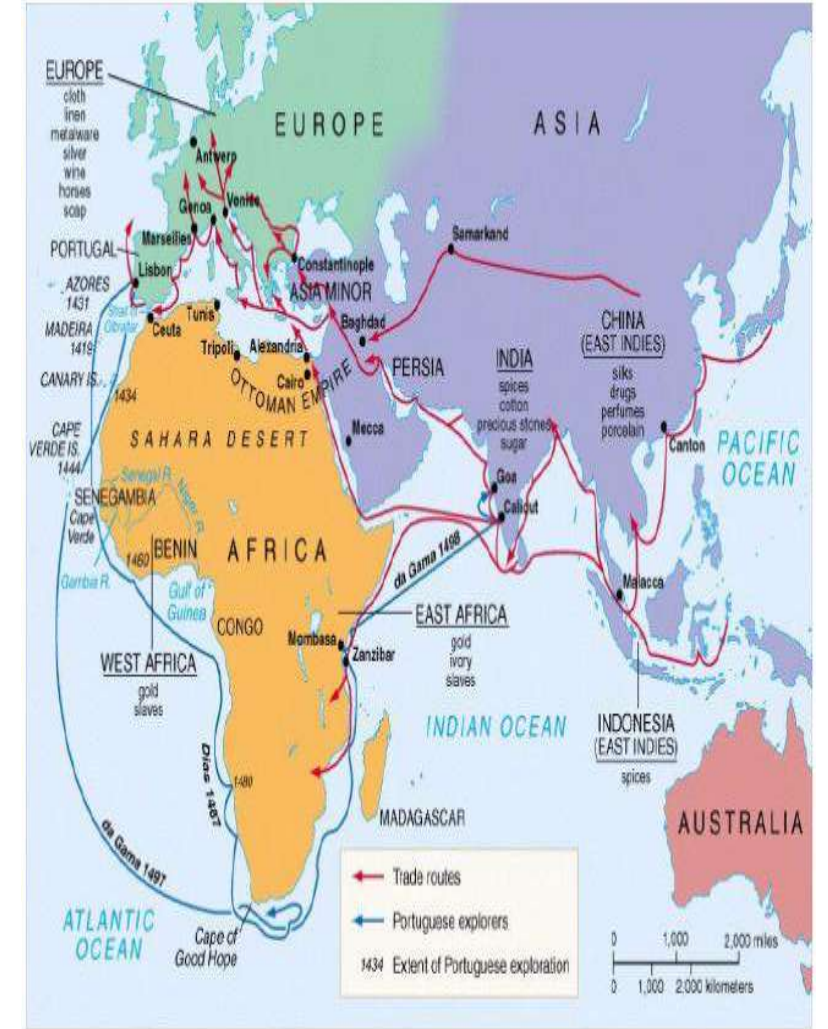


NOTE

भारत आगमन के जल एवं स्थल मार्ग

प्राचीन काल से ही भारत तथा यूरोप के मध्य व्यापारिक संबंध कायम थे। भारत तथा यूरोप के मध्य निम्नलिखित जल तथा स्थल मार्गों से व्यापार होता रहा है :-

- स्थल मार्ग बाल्कन प्रदेशों से तुर्की, ईरान, इराक होता हुआ अफगानिस्तान पहुंचता था फिर खैबर और गोमल जैसे दरों से होते हुए भारत तक आता था।
- जलमार्ग के दो रास्ते थे, एक मार्ग से पूर्वी वस्तुओं को फारस की खाड़ी से होते हुए इराक एवं तुर्की लाया जाता था, फिर इन्हें स्थल मार्ग द्वारा इटली भेज दिया जाता था। एक अन्य मार्ग से लाल सागर होते हुए वस्तुओं को मिस्र में लाया जाता था और फिर स्थल मार्ग द्वारा इन्हें इटली भेज दिया जाता था क्योंकि उस समय स्वेज नहर अनुपस्थित थी।



NOTE

Water and land routes of arrival in India

Trade relations existed between India and Europe since ancient times. Trade has been taking place between India and Europe through the following water and land routes :-

- The land route used to reach Afghanistan from the Balkan regions via Turkey, Iran, Iraq and then reached India via passes like Khyber and Gomal.
- There were two waterway routes, through one route eastern goods were brought to Iraq and Turkey via the Persian Gulf, then they were sent to Italy by land route. Through another route, goods were brought to Egypt via the Red Sea and then sent to Italy by land route because the Suez Canal was absent at that time.



NOTE

वणिकवाद या वणिक पूंजीवाद

17वीं शताब्दी में यूरोप में आर्थिक विचारों और प्रथाओं के एक समूह का बोलबाला रहा, जिसे वणिकवाद कहा गया। इसके विचार और नीति निर्धारण को संक्षिप्त में निम्न बिंदुओं में समझा सकता है-

- राज्य को विश्व व्यापार से जितना अधिक संभव हो, प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।
- सरकार को संरक्षणवाद के माध्यम से व्यापार का एक लाभदायक संतुलन तय करना चाहिए।
- राष्ट्र को अधिक से अधिक कीमती वस्तुओं का संचय करना चाहिए।
- उपनिवेशवाद को बढ़ावा देना ताकि राष्ट्र को निर्यात के लिए एक बाजार और कच्चे माल की आपूर्ति के लिए एक दीर्घकालिक साधन मिल सके।
- राष्ट्र को आयात पर कठोर प्रतिबंध लगाने चाहिए तथा निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए।

इस प्रकार, वणिकवाद को आक्रामक राष्ट्रवाद के एक आर्थिक पक्ष के रूप में समझा जा सकता है।

NOTE

Mercantilism Or Mercantile Capitalism

In 17th century Europe, a set of economic ideas and practices came to be known as mercantilism. Its ideas and policy formulation can be briefly explained in the following points: -

- ⇒ The state should try to get as much as possible from world trade.
- ⇒ The government should decide a profitable balance of trade through protectionism.
- ⇒ The nation should accumulate as many valuable items as possible.
- ⇒ To promote colonialism so that the nation could get a market for exports and a long-term means of supplying raw materials.
- ⇒ The nation should impose strict restrictions on imports and promote exports

Thus, mercantilism can be understood as an economic aspect of aggressive nationalism.

4) पुर्तगाल (1498-1961) : सर्वप्रथम आये - सबसे बाद गये

Portugal (1498-1961) : Came First – Last to go

1) पुर्तगालियों के भारत आगमन का कारण

2) सामान्य तथ्य

3) वास्कोडिगामा

4) महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर

5) नीले पानी की नीति और कार्दर्ज आर्मेडा काफिला व्यवस्था



6) पुर्तगालियों का व्यापार पर प्रभुत्व

7) पुर्तगालियों के भारत में विस्तार की नीति

8) पुर्तगालियों के पतन का कारण

9) पुर्तगाली शासन का भारत पर प्रभाव

10) महत्वपूर्ण तथ्य

4) Portugal (1498-1961) : First to come – Last to go

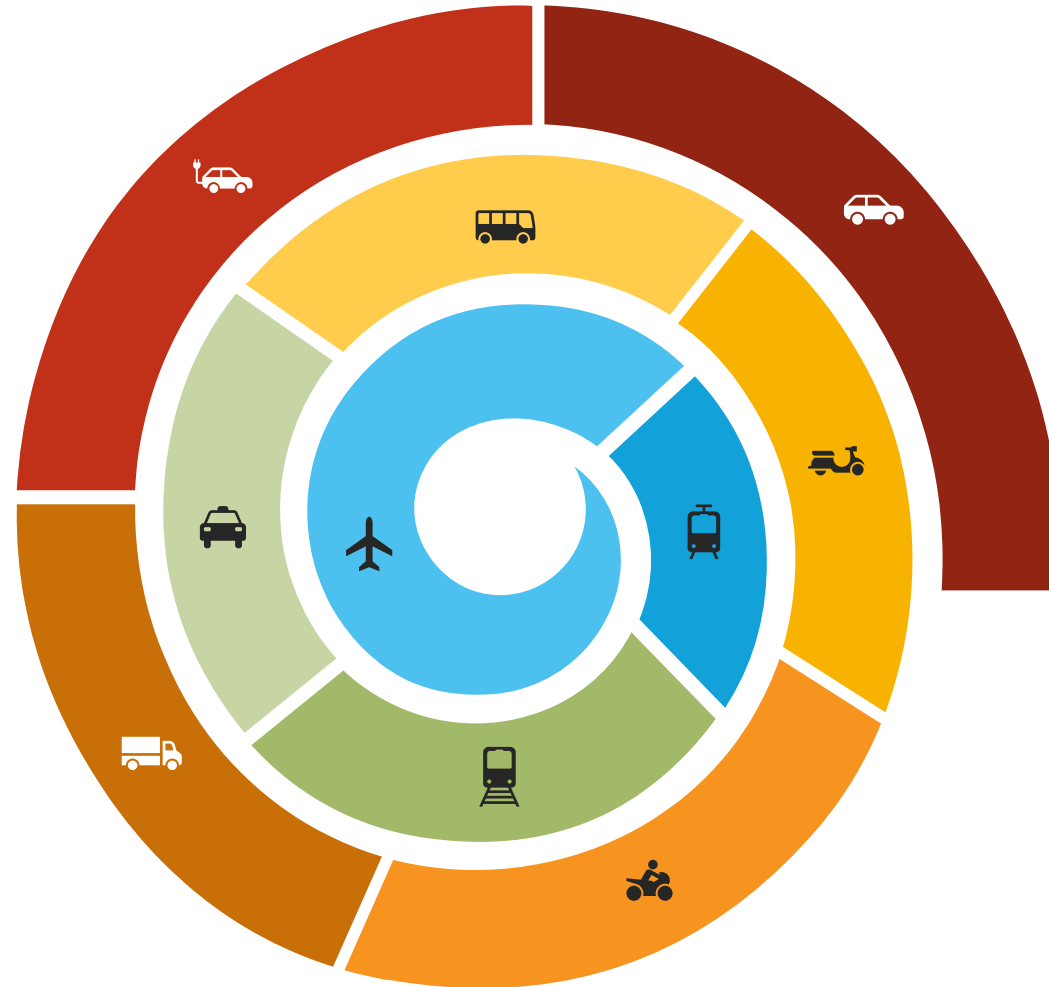
1) Reason for the arrival of Portuguese to India

2) General facts

3) Vasco da Gama

4) Important Portuguese Governor

5) Blue Water Policy and Cartz Armed Convoy Arrangement



6) Domination of Portuguese on trade

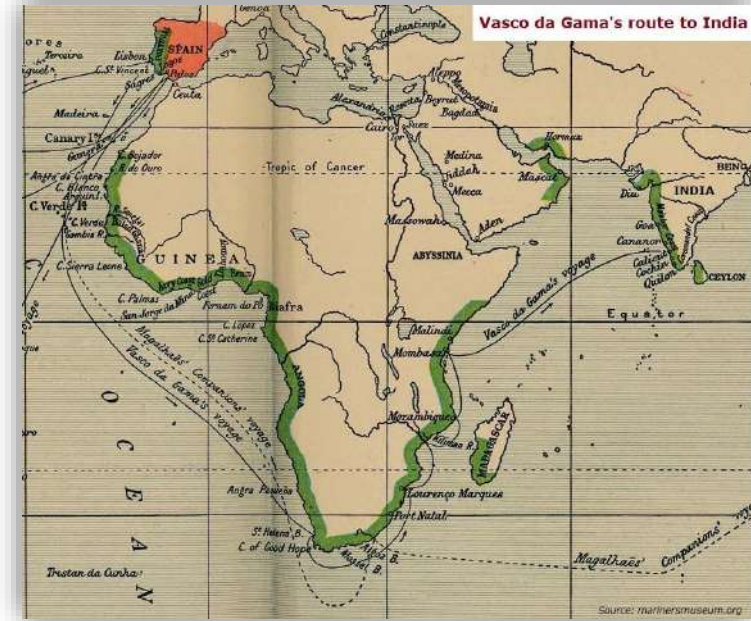
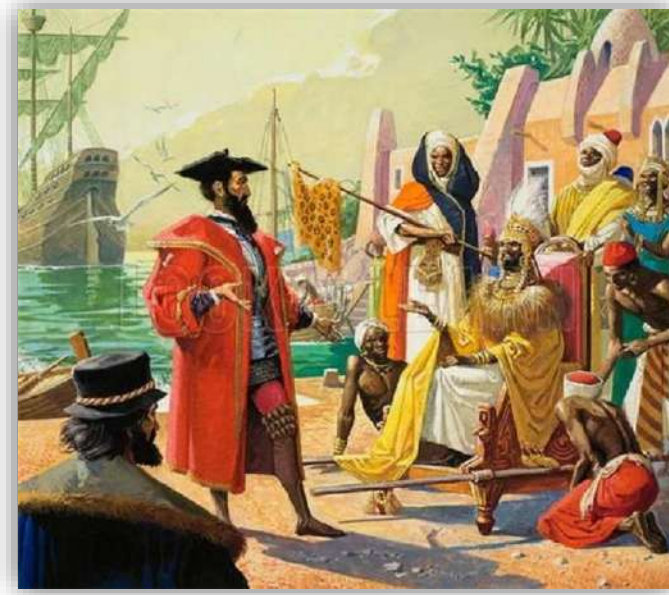
7) Policy of expansion of Portuguese in India

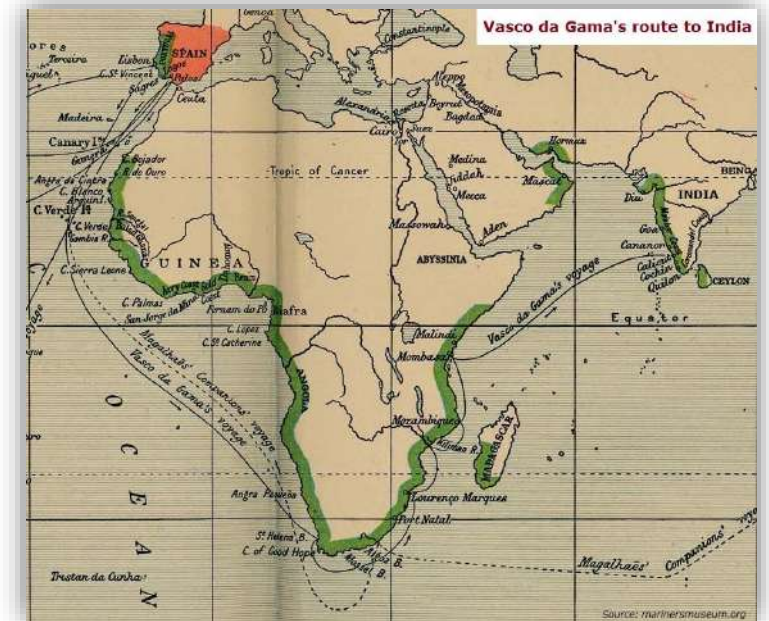
8) Reasons for the fall of Portuguese

9) Influence of Portuguese rule on India

10) Important facts

- 1498 → ■ प्रथम यूरोपीय वास्कोडिगामा समुद्री मार्ग से भारत पहुंचा
- 1503 → ■ कोचीन में प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री
- 1505 → ■ कन्नूर में द्वितीय पुर्तगाली फैक्ट्री
- 1505 → ■ प्रथम पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस्को डी अलमीडा की नियुक्ति
- 1509 → ■ गवर्नर अल्फांसो डी अल्बुकर्क द्वारा पुर्तगाल शक्ति की वास्तविक नींव
- 1510 → ■ पुर्तगालियों का गोवा पर अधिकार
- 1535 → ■ पुर्तगालियों का दीव पर अधिकार
- 1559 → ■ पुर्तगालियों का दमन पर अधिकार
- 1596 → ■ दक्षिण - पूर्व एशिया में डचो ने पुर्तगाल को हराया
- 1612 → ■ अंग्रेजों ने सूरत में हराया
- 1639 → ■ मराठों ने सालसेट और बेसिन पर अधिकार किया
- 1658 → ■ श्रीलंका और मालाबार में पुर्तगालियों की हार
- 1661 → ■ ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स द्वितीय द्वारा पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने पर मुंबई द्वीप दहेज में मिला





1) पुर्तगाल के भारत आगमन के कारण

- 1) मसाला व पूर्वी व्यापार पर अरब तथा इटली के एकाधिकार को समाप्त करना
- 2) ईसाई धर्म का प्रचार -प्रसार
- 3) पुर्तगाली राजकुमार हेनरी (द ने विगेटर) का प्रोत्साहन
 - बार्थोलोम्यो डियाज (1487) - केप आफ गुड होप
 - वास्को-डि-गामा (1498) - भारत
- 4) यूरोपीय पुनर्जागरण, वैज्ञानिक आविष्कार तथा बेहतर जहाज निर्माण तकनीक
- 5) विकसित अस्त्र-शस्त्र, नौसेना व समुद्री ज्ञान

2) पुर्तगाल सामान्य तथ्य

पुर्तगाल का प्रथम आगमन :- 20 मई 1498

वास्को - डि - गामा

कालीकट बंदरगाह

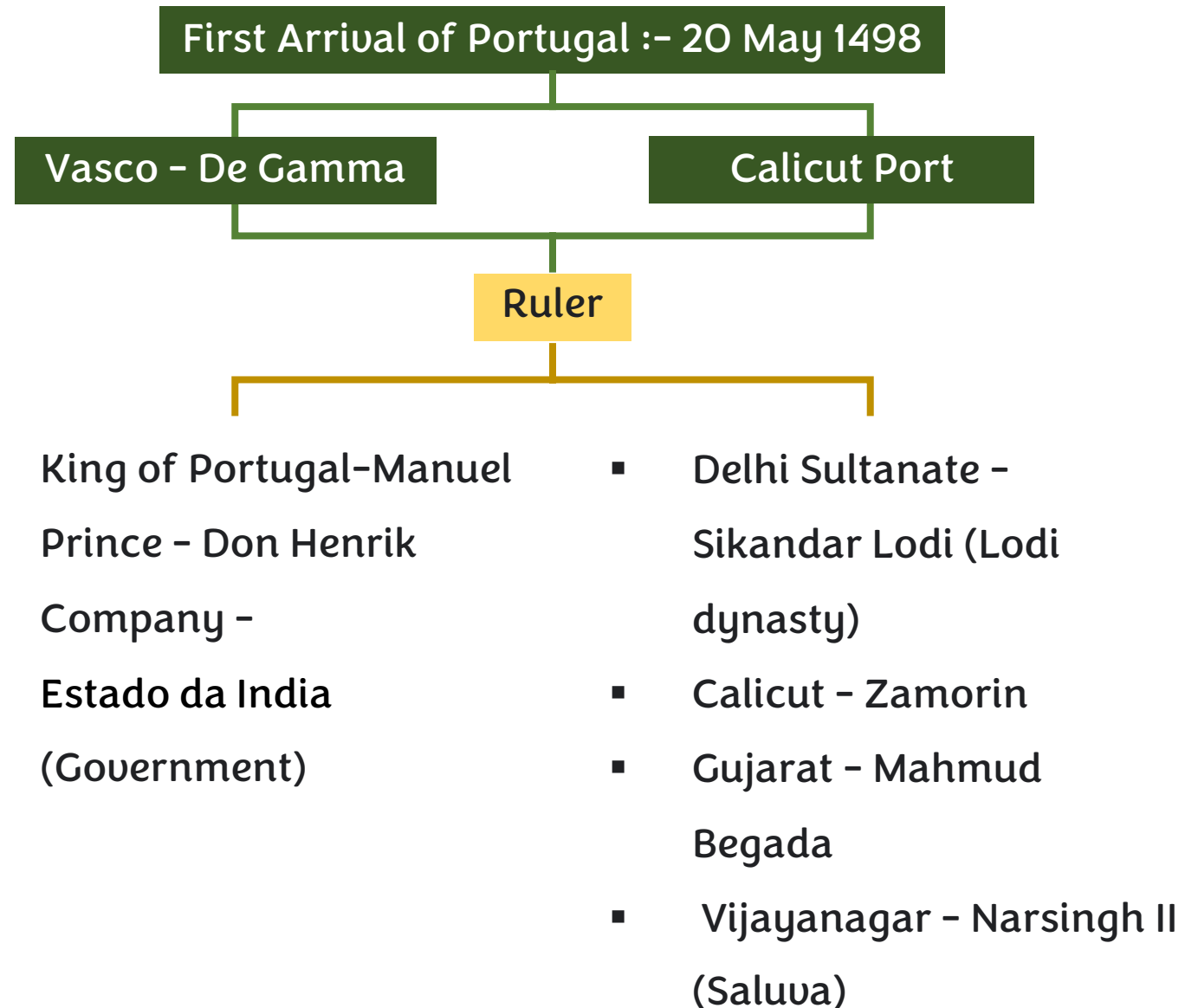
शासक

- पुर्तगाल राजा - मैनुअल
- राजकुमार - डॉन हेनरिक
- कंपनी - एस्तादो द इंडिया (सरकारी)
- दिल्ली सल्तनत -सिकंदर लोदी (लोदी वंश)
- कालीकट - जमोरिन
- गुजरात - महमूद बेगड़ा
- विजयनगर - नरसिंह द्वितीय (सालुव)

1) Reason for arrival of Portugal in India

- 1) Ending the monopoly of Arabs and Italy on spices and eastern trade
- 2) Propagation of Christianity
- 3) Encouragement of the Portuguese Prince Henry (The Navigator)
 - Bartholomeo Diaz (1487) - Cape of Good Hope
 - Vasco-da-Gama (1498) - India
- 4) European Renaissance, Scientific Inventions and Improved Shipbuilding Techniques
- 5) Developed weapons, naval and maritime knowledge

2) Portugal General Facts



3) वास्को - डि - गामा (1469-1524)

1) 20 मई 1498 को समुद्री मार्ग द्वारा भारत पहुंचने वाला प्रथम यूरोपीय :-

- भारत पहुंचने के नये समुद्री मार्ग की खोज।
(यूरोप → केप आफ गुड होप → भारत)
- समुद्री यात्रा में अहमद इब्न मज़ीदी (गुजराती) द्वारा सहायता
- कालीकट शासक जमोरिन द्वारा स्वागत
- अरब व्यापारियों द्वारा विरोध
- जहाज - साओ ग्रेनियल
- काली मिर्च के व्यापार से 60 गुना मुनाफा

NOTE

1500 ईस्वी में द्वितीय पुर्तगाली अभियान के तहत पेद्रो अल्वारेज कैब्राल 13 जहाजों के एक बेड़े का नायक बनकर भारत आया।
उसका अरब व्यापारियों के साथ भीषण संघर्ष हुआ।

2) 1502 :- वास्को-डि-गामा की द्वितीय भारत यात्रा

- व्यापार विस्तार हेतु कारखाना प्रणाली (इटली से प्रेरित)
 - ℒ प्रथम - कोचीन (1503)
 - ℒ द्वितीय - कन्नूर (1505)
- 1503 में पुर्तगाल के शासक द्वारा एकाधिकार नीति
 - ℒ 1505 से भारत में पुर्तगाली गवर्नर जनरल
 - ℒ प्रथम गवर्नर - फ्रांसिस्को - डी - अल्मीडा (1505-09)

3) 1524 :- वास्को -डि -गामा की तृतीय भारत यात्रा

- 24 दिसंबर 1524 - कोचीन में मृत्यु



3) Vasco-da-Gama (1469-1524)

1) The first European to reach India by sea on 20 May 1498:-

- Discovery of a new sea route to reach India.
(Europe → Cape of Good Hope → India)
- Helped by Ahmed ibn Mazidi (Gujarati) in sea voyage
- Welcomed by Calicut ruler Zamorin
- Protests by Arab traders
- Ship - Sao Grenial
- 60 times profit from pepper trading

NOTE

In 1500 AD, Pedro Alvarez Cabral came to India as the hero of a fleet of 13 ships as part of the second Portuguese expedition. He had a fierce conflict with Arab businessmen.

2) 1502 : Second visit of Vasco-da-Gama to India

- Factory system for business expansion (inspired by Italy)
 - ℒ 1st Factory - Cochin (1503)
 - ℒ 2nd - Kannur (1505)
- Monopoly policy by the ruler of Portugal in 1503
 - ℒ Portuguese Governor-General in India since 1505
 - ℒ First Governor - Francisco-de-Almeida (1505-09)

3) 1524 : Third visit to India of Vasco-da-Gama

- December 24, 1524 - Death in Cochin



4) प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर

फ्रांसिस्को - डी - अल्मीडा (1505-09)

अल्फांसो-डी-अल्बुकर्क (1509-15)

नीनो डी कुन्हा (1529-1598)

गार्सिया द नारोन्हा

अंतिम - मैनुअल एण्टोनियो (1558-1961)



4) Chief Portuguese Governor

Francisco de Almeida
(1505-09)

Alfonso-de-Albuquerque
(1509-15)

Nino de Cunha (1529-1598)

Garcia De Noronha

Last – Manuel Antonio (1958-
1961)



4.1) फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा (1505-09)

1) प्रथम पुर्तगाली गवर्नर (1505-09)

2) उद्देश्य :- व्यापार व नौसेना सुदृढीकरण

3) नीले पानी की नीति (Blue water policy) -

- * भूमि की अपेक्षा हिंदमहासागर पर पुर्तगालियों की जहाजी सर्वोच्चता स्थापित करना
- * उपकरण - नौसैनिक सुदृढ़ता तथा फितोरियोत की स्थापना
- * उद्देश्य - व्यापारिक एकाधिकार स्थापित करना
- * फितोरियो (FITORIO) - फितोरियो ऐसे व्यापारिक स्थल या अड्डे होते थे, जहां से नौसैनिक बेंड़ों को सहायता प्रदान की जाती थी।

4) विस्तार व युद्ध -

- * 1505 अंजेडीवा (गोवा), में दुर्ग निर्माण
- * अरबियों के बंदरगाहों तथा मस्जिदों पर हमला - जेद्दा, मक्का, मस्कट, कलहट आदि

■ 1507

- पुर्तगाली (फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा)
- मिस्र के मामेलुक सुल्तान + वेनिस + गुजरात शासक
- **चौल व दाबुल का युद्ध**
- परिणाम - पुर्तगाल हारे तथा फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा के बेटे लोरेन्जो की मृत्यु

■ 1509

- **दीव (Diu) का युद्ध**
- पुर्तगाल(फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा) + संयुक्त सेना + जमोरिन (ऑटोमन मदद)
- पुर्तगाल की विजय

↓
Blue water policy

↓
एशियाई सागर में पुर्तगालियों / यूरोपियों के प्रभुत्व का आरंभ



4.1) Francisco-de-almeida (1505-09)

1) First Portuguese Governor (1505-09)

2) **Objective :-** Trade and naval strengthening

3) **Blue water policy -**

- * Establishing Portuguese naval supremacy in the Indian Ocean rather than on land.
- * Equipment - Establishment of naval reinforcements and Fitoriyot
- * Objective: To establish business monopoly
- * FITORIO - Fitorios were trading posts or bases from where support was provided to naval forces.

4) **Expansion and war -**

- * 1505 Fort construction in Anjediwa (Goa),
- * Attack on Arab ports and mosques - Jeddah, Mecca, Muscat, Kalhat etc.

■ **1507**

- Portuguese (Francisco de Almeida)
- Mameluk Sultans of Egypt + Venice + Gujarat Rulers
- **Battle of Chaul and Dabul**
- Result: Portugal defeated and Francisco de Almeida's son Lorenzo died.

■ **1509**

- **Battle of Diu**
- Portugal(Francisco-de-Almeida) + Combined Arms + Zamorin help)
- conquest of portugal

↓
Blue water policy

↓
Beginning of Portuguese/European dominance in the Asian Sea



4.2) अल्फांसो-डी-अल्बुकर्क (1509-15)

1) 1503 में कमांडर के रूप में तथा 1509 में द्वितीय पुर्तगाली गवर्नर

2) **मुख्यालय** - कोचीन

3) **भारत व हिंदमहासागर में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक :-**

- **1510 :** बीजापुर के शासक आदिल युसुफशाह से गोवा छीना (सिकन्दर के बाद भारत में पहली बार यूरोपियन बस्ती की स्थापना हुई)
- **1511 :** मलक्का जलसन्धि पर अधिकार करके मसाला द्वीप पर प्रभुत्व
- **1515 :** होमुर्ज जलसंधि पर अधिकार
- बंगाल के हुगली व बालासोर में फैक्ट्री
- प्रबल कूटनीति द्वारा विजयनगर के शासक राजा कृष्णदेव राय से घनिष्ठ संबंध

4) **अल्बुकर्क की सामाजिक नीति :-**

- सती प्रथा का उन्मूलन
- पुर्तगाली पुरुषों को भारतीय महिलाओं से शादी हेतु प्रोत्साहन
- गोवा में नवीन सिंचाई प्रणाली तथा तंबाकू, काजू जैसी फसलों की खेती
- सड़क व अस्पताल
- मुस्लिमों से कटु सम्बंध

5) **अल्बुकर्क का कूटनीति पहलू :-**

- विजयनगर के साथ अच्छे संबंध विकसित हुए क्योंकि दोनों का साझा दुश्मन दक्कन सल्तनत था।
- 1520 में कृष्ण देव राय ने एक किला उपहार में दिया था।
- दोनों राज्यों ने एक-दूसरे के यहां दूतावास भेजे।
- यूरोप से विजयनगर को घोड़े की आपूर्ति की जाती थी।

6) **1515 में गोवा में मृत्यु**

4.2) alphonso-de-albuquerque (1509-15)

- 1) As commander in 1503 and second Portuguese governor in 1509
- 2) the headquarters - Cochin

3) The real founder of Portuguese power in India and the Indian Ocean :-

- ✚ **1510** : Goa was snatched from Bijapur ruler Adil Yusufshah (European settlement was established in India for the first time after Alexander)
- ✚ **1511** : Domination of the Spice Islands by capturing the Strait of Malacca
- ✚ **1515** : Capture of Homurz Strait
- ✚ Factories in Hooghly and Balasore of Bengal
- ✚ Close relations with King Krishnadeva Raya, the ruler of Vijayanagara through strong diplomacy.

4) Albuquerque's social policy :-

- ✚ abolition of sati
- ✚ Portuguese men encouraged to marry Indian women
- ✚ New irrigation system and cultivation of crops like tobacco, cashew in Goa.
- ✚ road and hospital
- ✚ Bitter relations with Muslims

5) Diplomacy aspect of Albuquerque :-

- ✚ Good relations developed with Vijayanagara as their common enemy was the Deccan Sultanates.
- ✚ Krishna Dev Rai gifted a fort in 1520.
- ✚ Both states sent embassies to each other.
- ✚ Horses were supplied to Vijayanagara from Europe.

6) Died in Goa in 1515

गोवा का महत्व

- ◆ यह भारत में विशेष रूप से गोवा में उतारने वाले अरब और फ़ारसी युद्ध-घोड़ों का महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाह था।
- ◆ व्यापार और सामरिक महत्व के कारण यह क्षेत्र आय का सबसे मूल्यवान स्रोत माना जाता था।
- ◆ गोवा पर कब्ज़ा करने से पुर्तगालियों को अरब सागर और हिंद महासागर में व्यापार नियंत्रण पाने में मदद मिली
- ◆ गोवा में मजबूत नौसैनिक अड्डा स्थापित करके पुर्तगालियों ने क्षेत्रीय साम्राज्य को सावधान रहने का संकेत दिया।
- ◆ अल्बुकर्क ने गोवा का व्यापारिक महत्व बढ़ाने के लिए उसकी किलेबंदी भी की।

1515 - 1529

निर्वात व भारतीय राजनीतिक परिवर्तन

- 1515 से 1529 तक 6 पुर्तगाली गवर्नर
- 1526 :- पानीपत का प्रथम युद्ध व भारत में मुगल सत्ता का आरंभ।
- 1529 :- कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद कमजोर पर जयनगर साम्राज्य

Importance Of Goa

- ◆ It was an important trading port for Arab and Persian war-horses unloaded in India, especially at Goa.
- ◆ Due to trade and strategic importance this area was considered the most valuable source of income.
- ◆ The capture of Goa helped the Portuguese gain control of trade in the Arabian Sea and the Indian Ocean
- ◆ By establishing a strong naval base in Goa, the Portuguese sent a signal to the regional empire to be cautious.
- ◆ Albuquerque also fortified Goa to increase its commercial importance.

1515 - 1529

Vacuum and Indian political change

- 6 Portuguese governors from 1515 to 1529
- 1526 :- First battle of Panipat and beginning of Mughal power in India.
- 1529 :- Jayanagara Empire weakened after the death of Krishnadev Rai.

4.3) नीनो-डी-कुन्हा (1529-1538)

- 1) वह 1529 में गवर्नर बने।
- 2) उन्होंने मुख्यालय को कोचीन से गोवा स्थानांतरित कर दिया।
- 3) गुजरात के बहादुर शाह ने मुगल सम्राट हुमायूँ के साथ अपने संघर्ष के दौरान पुर्तगालियों से मदद हासिल की और बदले में उन्होंने बसिन द्वीप को सौंप दिया और दीव में एक आधार बनाने का भी वादा किया।

4.4) गार्सिया द नारोन्हा

दमन, साल्सेर , बंबई , मद्रास में केंद्र की स्थापना

सीलोन (श्रीलंका) के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार

4.5) मैनेअल एण्टोनियो सील्वा

अंतिम पुर्तगाली गवर्नर (1958- 19 दिसंबर 1961)

ऑपरेशन विजय द्वारा शेष पुर्तगाली बस्तियों (गोवा, दमन , दीव) का भारत में विलय ।



4.3) Nino-de-cunha (1529-1538)

- 1) He became governor in 1529.
- 2) He shifted the headquarters from Cochin to Goa.
- 3) Bahadur Shah of Gujarat secured help from the Portuguese during his conflict with the Mughal emperor Humayun and in return he ceded Bassin Island and also promised to build a base at Diu.

4.4) Garcia de noronha

- Establishment of centers in Daman, Salser, Bombay, Madras
- Control over most parts of Ceylon (Sri Lanka)

4.5) Manel antonio silva

- Last Portuguese Governor (1958– 19 December 1961)
- Annexation of the remaining Portuguese colonies (Goa, Daman, Diu) into India by Operation Vijay.



5) कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था (Cartaz -Armada -Convoy system)

- हिंद महासागर में जहाज से व्यापार करने हेतु भारतीय व अरबी व्यापारियों द्वारा पुर्तगालीयों से परमिट लेने की व्यवस्था।
- **उद्देश्य :-** हिंद महासागरीय व्यापार पर पुर्तगाली एकाधिकार स्थापित करना।
- **अन्य तथ्य :-**
 - » कार्टज - परमिट
 - » आर्मेडा - बाध्यकारी } **बाध्यकारी परमिट**
 - » भारतीय व अरबी जहाज, काली मिर्च व गोला बारूद नहीं ले सकते थे।
 - » जहाजों की रक्षा हेतु पुर्तगाली संरक्षक बेड़े का साथ
 - » मुगल बादशाह अकबर ने भी कार्टज लिया।
 - » पुर्तगाली स्वयं को "**सागर का स्वामी**" कहते थे।

पुर्तगाल समुद्र पर वर्चस्व बना सके क्योंकि भारतीय शासकों ने नौ सैनिक शक्ति को मजबूत करने का प्रयास नहीं किया।



5) Cartaz - Armada - Convoy system

- Arrangements for Indian and Arabic traders to obtain permits from the Portuguese to trade by ship in the Indian Ocean.
- **Objective :-** To establish Portuguese monopoly on Indian Ocean trade.
- **Other facts :-**
 - » Carthage - Perm
 - » Armada - Binding

Binding Permit

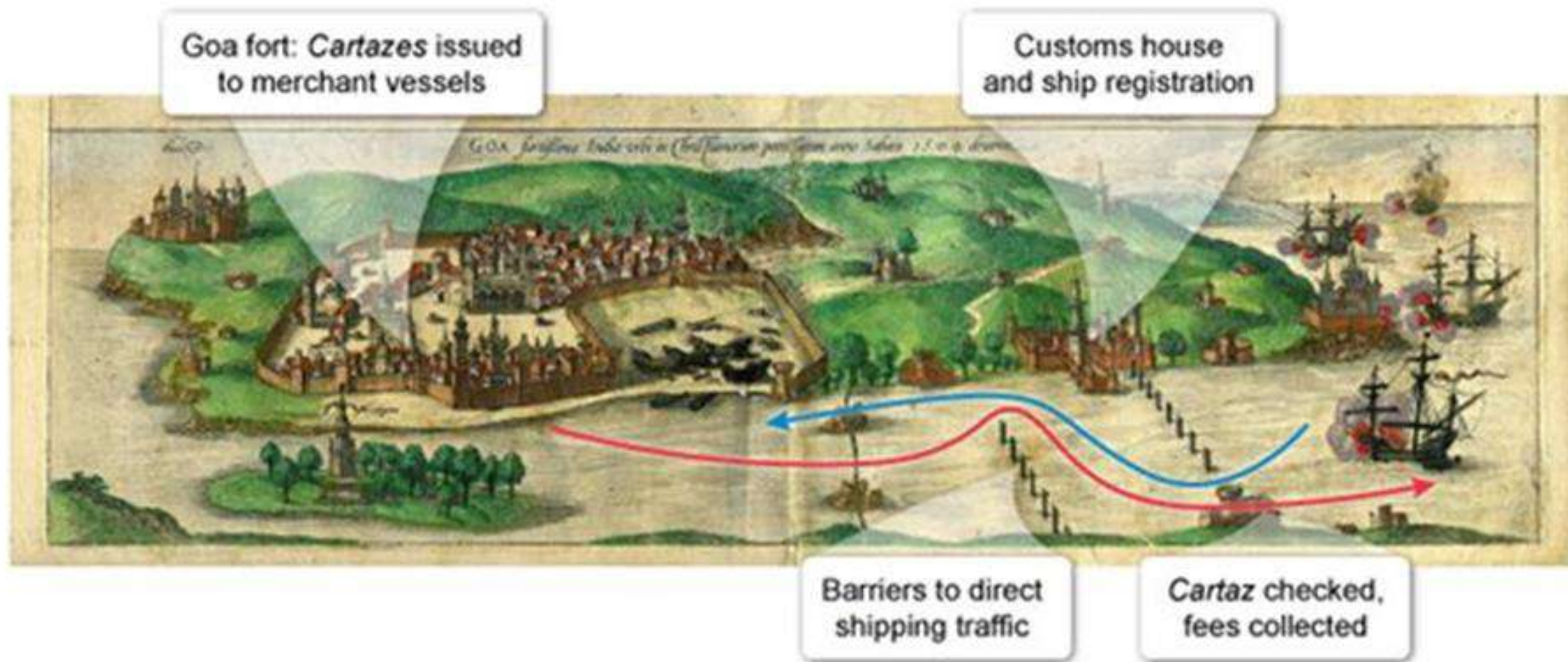
- » Indian and Arab ships could not take pepper and ammunition.
- » Portuguese protectorate accompanied the fleet to protect the ships.
- » Mughal emperor Akbar also took Carthage
- » The Portuguese called themselves "**Lords of the Sea**"

Portugal could dominate the sea because the Indian rulers did not try to strengthen their naval power.



Portuguese *cartaz* system (1502–circa 1750)

Licensing system in the Indian Ocean aimed at increasing revenue by diverting trade to Portuguese customs houses. The system, enforced by Portugal's navy, dictated permissible cargo, supported Portuguese royal monopoly companies, and temporarily restructured regional trade.



6) पुर्तगालियों का व्यापार पर प्रभुत्व

Domination of Portuguese on trade

पुर्तगाली दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ समुद्री मार्ग से व्यापार करने वाले पहले यूरोपीय थे और उन्होंने निम्न प्रकार से अपने व्यापार का विस्तार किया :-

- 1) मालाबार तट से मसालों तथा कोरोमंडल तट से वस्त्रों के व्यापार पर जोर
- 2) उत्तर पश्चिम भारत से टाफ़्टा (एक प्रकार का कपड़ा) का व्यापार
- 3) मलक्का मलीना आदि से लॉन्ग, कस्तूरी, लाख इत्यादि का व्यापार करने हेतु नागपट्टनम को प्रमुख बंदरगाह बनाया
- 4) वे वस्तुओं को खरीदने के लिए पश्चिम से सोना चांदी और अन्य बहुमूल्य रत्न लाते थे।
- 5) मसालों के अलावा, परिवहन के द्वारा भी लाभ
- 6) पुर्तगालियों को सबसे सर्वाधिक लाभ काली मिर्च के व्यापार से हुआ वह लगभग 170000 कूजेडो प्रतिवर्ष सिर्फ काली मिर्च के व्यापार हेतु भारत भेजा करते थे।

6) Domination of Portuguese on trade

The Portuguese were the first Europeans to trade by sea with South East Asia and expanded their trade in the following ways :-

- 1) Emphasis on trade of spices from Malabar Coast and textiles from Coromandel Coast
- 2) Trade of taffeta (a type of cloth) from North-West India
- 3) Nagapattinam was made the main port for the trade of clove, musk, lac etc. from Malacca Malina etc.
- 4) They brought gold, silver and other precious stones from the West to buy goods.
- 5) Apart from spices, there are also benefits through transportation.
- 6) The Portuguese got the most profit from the trade of black pepper. They used to send about 170,000 Cruzados every year to India just for the trade of black pepper.

फ्रांसिस जेवियर (1506-1552)

- 1) एक संत जो सोसाइटी ऑफ जीसस के सह-संस्थापक थे।
- 2) नवरे साम्राज्य (स्पेन) के जेवियर में जन्मे
- 3) लोयोला के इग्राटियस के साथी और पहले सात जेसुइट्स में से एक, जिन्होंने 1534 में मोंटमाट्रे, पेरिस में गरीबी और शुद्धता की शपथ ली थी।
- 4) उन्होंने एशिया में एक व्यापक मिशन का नेतृत्व किया।
- 5) 1542 में गोवा पहुंचे
- 6) गोवा इंकवायरी का प्रस्ताव फ्रांसिस जेवियर द्वारा किया गया था, पुर्तगाल के राजा जॉन III को उनके पत्र में एक विशेष मंत्री की मांग की गई थी जिसका एकमात्र कार्यालय गोवा में ईसाई धर्म को आगे बढ़ाना होगा।
- 7) जापान, बोर्नियो, मालुकु द्वीप और अन्य क्षेत्रों में उद्यम करने वाला पहला ईसाई मिशनरी।

- 8) उन क्षेत्रों में, स्थानीय भाषाओं को सीखने के लिए संघर्ष करते हुए और विरोध का सामना करते हुए, उन्हें भारत की तुलना में कम सफलता मिली।
- 9) वह चीन में अपने मिशनरी उपदेश का विस्तार करने ही वाले थे कि शांगचुआन द्वीप पर उनकी मृत्यु हो गई।
- 10) 11 दिसंबर 1553 को जेवियर का शव गोवा भेज दिया गया।
- 11) शव अब गोवा में बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस में है।



Francis Xavier (1506-1552)

- 1) A saint who was a co-founder of Society of Jesus.
- 2) Born in Javier in the Kingdom of Navarre (Spain)
- 3) Companion of Ignatius of Loyola and one of the first seven Jesuits who took vows of poverty and chastity at Montmartre, Paris in 1534.
- 4) He led an extensive mission into Asia.
- 5) Arrived in Goa 1542
- 6) Goa Inquisition was proposed by Francis Xavier, his letter to the king of Portugal, John III, asked for a special minister whose sole office would be to further Christianity in Goa.
- 7) First Christian missionary to venture into Japan, Borneo, the Maluku Islands, and other areas.
- 8) In those areas, struggling to learn the local languages and in the face of opposition, he had less success than he had enjoyed in India.
- 9) He was about to extend his missionary preaching to China when he died on Shangchuan Island.
- 10) On 11 December 1553, Xavier's body was shipped to Goa.
- 11) The body is now in the Basilica of Bom Jesus in Goa.



7) पुर्तगालियों को मुगलों का साथ नहीं मिला

- 1) पुर्तगाली समुद्री डकैती के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य के साथ संघर्ष हुआ।
- 2) 1613 में, पुर्तगालियों ने मुगल जहाजों पर कब्ज़ा और लूटपाट करके जहांगीर को नाराज कर दिया। इससे क्रोधित होकर जहांगीर ने मुकर्रब खान को मुआवजा प्राप्त करने का आदेश दिया।
- 3) अंततः, शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान, मुगल दरबार में पुर्तगालियों को जो लाभ प्राप्त थे, वे हमेशा के लिए नष्ट हो गये।
- 4) वहां उन्होंने नमक के निर्माण पर एकाधिकार कर लिया, अपना एक कस्टम हाउस बनाया और तंबाकू पर सख्त कर लगा दिया।
- 5) पुर्तगालियों ने न केवल व्यापारियों के रूप में पैसा कमाया, बल्कि हिंदू और मुस्लिम बच्चों को खरीदकर या जब्त करके क्रूर दास व्यापार भी शुरू किया, जिन्हें उन्होंने ईसाई के रूप में पाला।
- 6) अपनी नापाक गतिविधियों के दौरान, उन्होंने मुमताज महल की दो दासियों को पकड़ लिया। शाहजहाँ ने बंगाल के गवर्नर कासिम खान को पुर्तगालियों के विरुद्ध कार्रवाई करने का आदेश दिया।
- 7) 24 जून, 1632 को हुगली की घेराबंदी शुरू हुई, जो तीन महीने बाद उसके कब्जे में समाप्त हुई।
- 8) हुगली की घेराबंदी के कारण अंततः पुर्तगाली भाग गए।

7) Portuguese lose favour with Mughals

- 1) Portuguese act of piracy resulted in conflict with the Mughal empire.
- 2) In 1613, Portuguese offended Jahangir by capturing and plundering Mughal ships. Enraged by this Jahagir ordered Muqarrab Khan to obtain compensation.
- 3) Finally, during the reign of Shah Jahan, the advantages which Portuguese enjoyed in Mughal court were lost forever.
- 4) There they monopolised the manufacture of salt, built a custom house of their own and imposed strict levy on tobacco.
- 5) The Portuguese not only made money as traders but also started a cruel slave trade by purchasing or seizing Hindu and Muslim children, whom they brought up as Christians.
- 6) In the course of their nefarious activities, they seized two slave girls of Mumtaz Mahal. Shah Jahan ordered the Bengal governor Qasim Khan to take action against the Portuguese.
- 7) On June 24, 1632, the siege of Hooghly began, ending in its capture three months later.
- 8) A siege of Hooghly finally led to the Portuguese fleeing.

8) पुर्तगालियों के पतन का कारण || Reasons for the fall of Portuguese

पुर्तगाली भारत आने वाले सबसे प्रथम यूरोपियन थे तथा भारत से जाने वाली सबसे अंतिम। इसके बाद भी निम्नलिखित कारणों के चलते वह भारत में छोटे से क्षेत्र में सीमित रह गए :-

- 1) भ्रष्ट शासन व दोषपूर्ण व्यवस्था
- 2) कार्टेज पद्धति, लूट की नीति तथा व्यापारिक दूरदर्शिता की कमी
- 3) स्पेन का पुर्तगाल पर अधिकार तथा निरंकुश राजतंत्र
- 4) पुर्तगाल की कंपनी पूर्णता सरकार के एकाधिकार में होना
- 5) धार्मिक असहिष्णुता की नीति तथा जबरन ईसाइयत का प्रचार
- 6) अंग्रेज, डच जैसी उभरती नौसैनिक शक्तियों से पराजय

- 7) मुगल साम्राज्य का विस्तार तथा बेहतर संबंधों का अभाव
- 8) ब्राजील की खोज के बाद भारत पर ध्यान की कमी
- 9) आयोग गवर्नर की नियुक्ति
- 10) सीमित पुर्तगाली संसाधनों के कारण पुर्तगाल में व्यापार तकनीक कौशल का पिछड़ापन

8) Reasons for decline of Portuguese

Portuguese were the first Europeans to come to India and the last to leave India. Even after this, due to the following reasons, he remained confined to a small area in India. :-

- 1) Corrupt government and faulty system
- 2) Cartaz system, policy of plunder, and lack of commercial foresight
- 3) Spain's authority over Portugal and autocratic monarchy
- 4) Monopolized by the company wholeness government of Portugal
- 5) Policy of religious intolerance and forced propagation of Christianity.
- 6) Defeated by emerging naval powers like British, Dutch
- 7) Expansion of the Mughal Empire and lack of better relations
- 8) Lack of focus on India after the discovery of Brazil
- 9) Appointment of incompetent governors.
- 10) Backwardness of trade-technical skills in Portugal due to limited Portuguese resources

9) पुर्तगाली शासन का भारत पर प्रभाव

Impact of Portuguese rule on India

पुर्तगालियों भारत के आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी कृषि व स्थापत्य कला को निम्न तरीके से प्रभावित किया :-

1) तकनीकी योगदान :-

- 1556 में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना
- जहाज व हथियार निर्माण की तकनीकें

2) कृषि में योगदान :-

- नवीन फसले - तंबाकू, आलू, मूंगफली, टमाटर, शकरकंद, मक्का, रबड़, लाल मिर्च, कहवा
- नवीन फल - पपीता, अनानास, अमरुद, अल्फांसो आम, चीकू आदि

3) सामाजिक व धार्मिक योगदान :-

- भारत में ईसाई धर्म व मिशनरी की शुरुआत (1st पादरी - फ्रांसिस्को जेवियर)
- सती प्रथा को रोकने का प्रयास

4) स्थापत्य कला योगदान :-

- गोथिक स्थापत्य कला - केरल में सेंट थॉमस चर्च की स्थापना (1510)



9) Impact of Portuguese rule on India

Portuguese influenced India's economic, social, technical agriculture, and architecture in following ways :-

1) Technical contribution:-

- Establishment of Printing Press in Goa in 1556
- Ship and weapon building techniques

2) Contribution to agriculture:-

- Innovative crops – tobacco, potato, groundnut, tomato, sweet potato, maize, rubber, red chili, kahwa
- New fruits – papaya, pineapple, guava, Alphonso mango, chikoo, etc.

3) Social and religious contribution:-

- Beginning of Christianity and Missionary in India (1st father – Francisco Javier)
- Efforts to stop the practice of Sati

4) Architectural contribution:-

- Gothic Architecture – Establishment of St. Thomas Church in Kerala (1510)



10) अन्य तथ्य || Other Facts

- 1) स्वतंत्रता प्राप्ति के समय गोवा गवर्नर :- बोस्सा
- 2) अंतिम गवर्नर (1961) :- मैनुएल एंटोनिओ 1958-1986
- 3) ऑपरेशन विजय :- पुर्तगाली बस्ती गोवा, दमन दीप का भारत विलय
 - * वाइस किंगडम
 - * समान नागरिक संहिता
 - * 19 दिसंबर 1961 ➡ गोवा मुक्ति दिवस



10) Other Facts

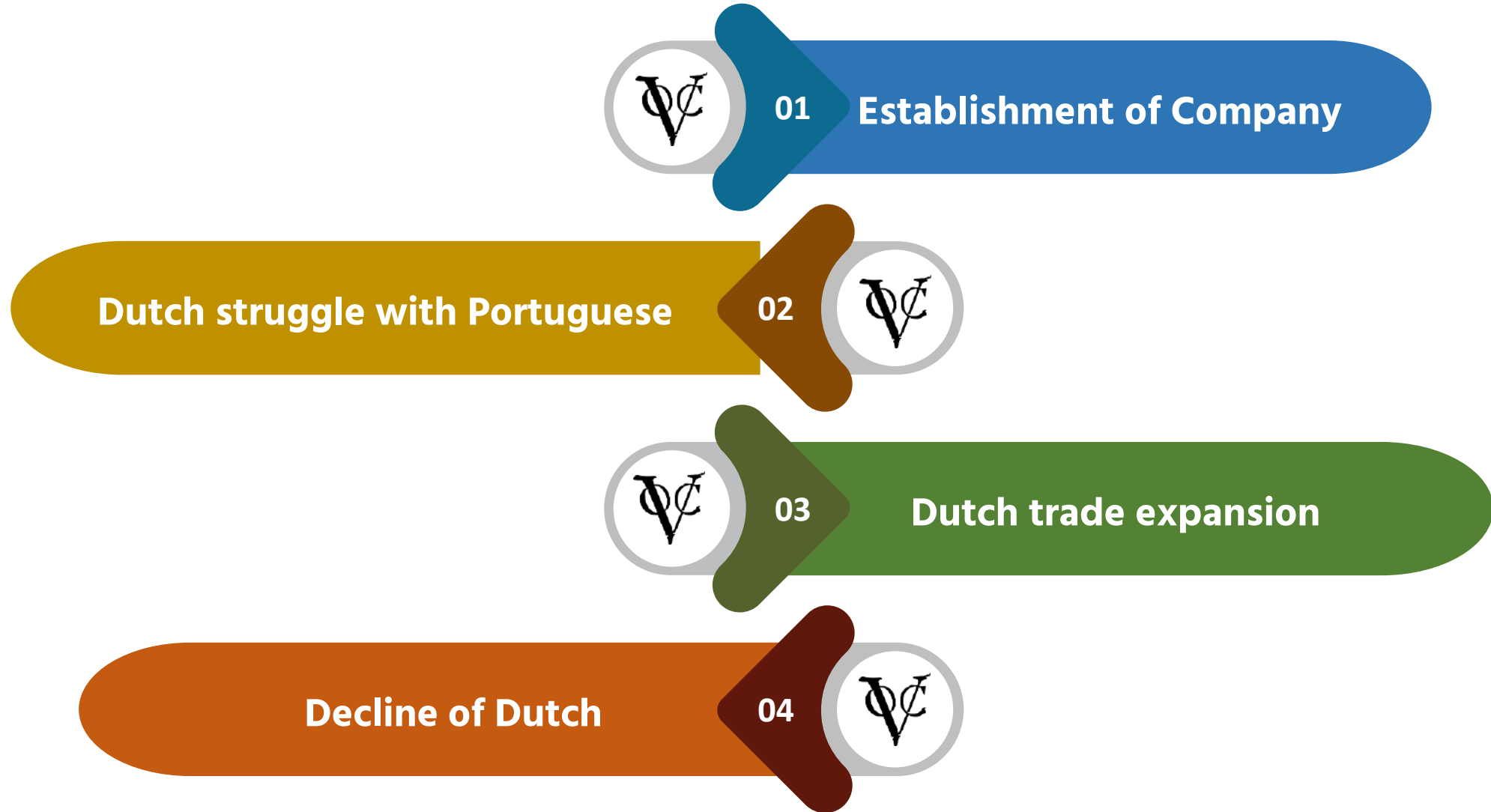
- 1) **Goa Governor at the time of independence :- Bossa**
- 2) **Last governor (1961) :- Manuel Antonio**
1958-1986
- 3) **Operation Vijay :- Portuguese colony**
Goa Daman Deep merges with India
 - ✳ Vice kingdom
 - ✳ Uniform Civil Code
 - ✳ 19 December 1961 → Goa Liberation Day

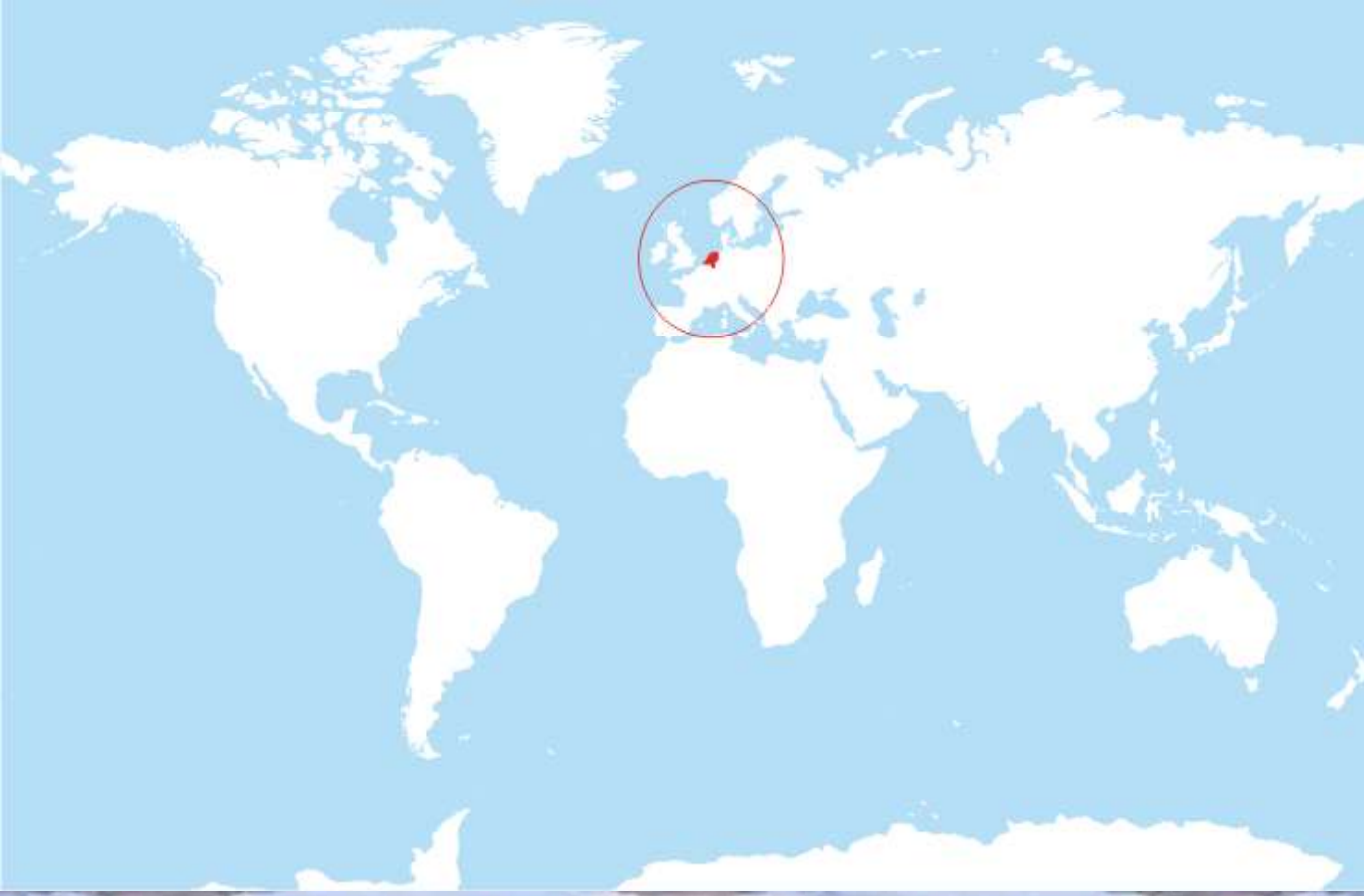


5) डच || Dutch – नीदरलैंड/हॉलैंड के निवासी



5) Dutch - Netherlands/Holland residents





1596

- कार्नेलियस डेहस्तमान सुमात्रा तथा भारत पहुंचा (प्रथम डच नागरिक)

1602

- डच संसद ने यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड (Veree..) को स्थापित किया (संयुक्त उपक्रम कंपनी)

1605

- मसूलीपट्टनम में प्रथम भारतीय फैक्ट्री

1610

- पुलिकट में एकमात्र किला बंद फैक्ट्री की स्थापना (नाम - गोल्ड्रिया)

1610

- गोल्ड्रिया में पगोडा नामक स्वर्ण सिक्के

1616

- सूरत में फैक्ट्री

1619

- इंडोनेशिया के जकार्ता में स्थित बैटेविया को मुख्यालय बनाया

1627

- बंगाल के पीपली में पहली फैक्ट्री

1641

- पुर्तगालियों से मलक्का छीना

1658

- पुर्तगालियों से श्रीलंका छीना

1658

- पुलिकट के बाद भारत में नागपट्टनम को केंद्र बनाया

1759

- अंग्रेज व डचों के मध्य बेदरा का युद्ध

1795

- भारत छोड़कर चले गए

1596 → ▪ Cornelius Dehstamann reached Sumatra and India (1st Dutch citizen)

1602 → ▪ Dutch Parliament established United East India Company of Netherlands

1605 → ▪ First Indian factory in Masulipatnam

1610 → ▪ Establishment of only fortified factory in Pulicat (name - Goldria)

1610 → ▪ Gold coins called pagodas in goldrea

1616 → ▪ First factory in Peepli, Bengal

1619 → ▪ Headquartered at Batavia in Jakarta, Indonesia

1627 → ▪ Factory in surat

1641 → ▪ Portuguese snatched Malacca

1658 → ▪ Captured Sri lanka from portuguese

1658 → ▪ After Pulicat, Nagapatnam was made center in India.

1759 → ▪ Battle of Bedra between British and Dutch

1795 → ▪ Left India

1) कम्पनी की स्थापना || Establishment of company

नाम :- यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड्स || Verenigde Oostindische Compagnie (1602)

कारण - पुर्तगालियों को पूर्व से होने वाला लाभ

मुख्यालय - बटाविया (इंडोनेशिया)

प्रथम भारतीय केंद्र - मसूलिपटनम

संयुक्त कंपनी (17 सदस्यीय बोर्ड)

प्रारंभिक पूंजी - 6500000 गिल्डर

- **1602 :-** डच संसद ने कंपनी को 21 वर्षों का पूर्वी व्यापार एकाधिकार दिया
- **उद्देश्य :-** एशियाई मसाला व वस्त्र व्यापार द्वारा लाभ अर्जन
- **विशेषता :-**
 - ≠ भारत से ज्यादा इंडोनेशिया(मसाला द्वीप) पर बल
 - ≠ भारत को वस्त्र व्यापार का केंद्र बनाया
 - ≠ भारत के कोरोमंडल तट पर ज्यादा व्यापार
 - ≠ भारतीय मुख्यालय - पुलीकट



Amsterdam VOC HQ



The "United East India Company", or "United East Indies Company" (also known by the abbreviation "VOC" in Dutch) was the brainchild of [Johan van Oldenbarnevelt](#), the leading statesman of the Dutch Republic.

1) Establishment of company

Name :- United East India Company of Netherlands || Verenigde Oostindische Compagnie (1602)

Reason – Huge profit of Portuguese from east

Headquarters - Batavia (Indonesia)

First Indian Centre - Masulipatnam

Joint Company (17 Member Board)

Starting Capital - 6500000 Gilder

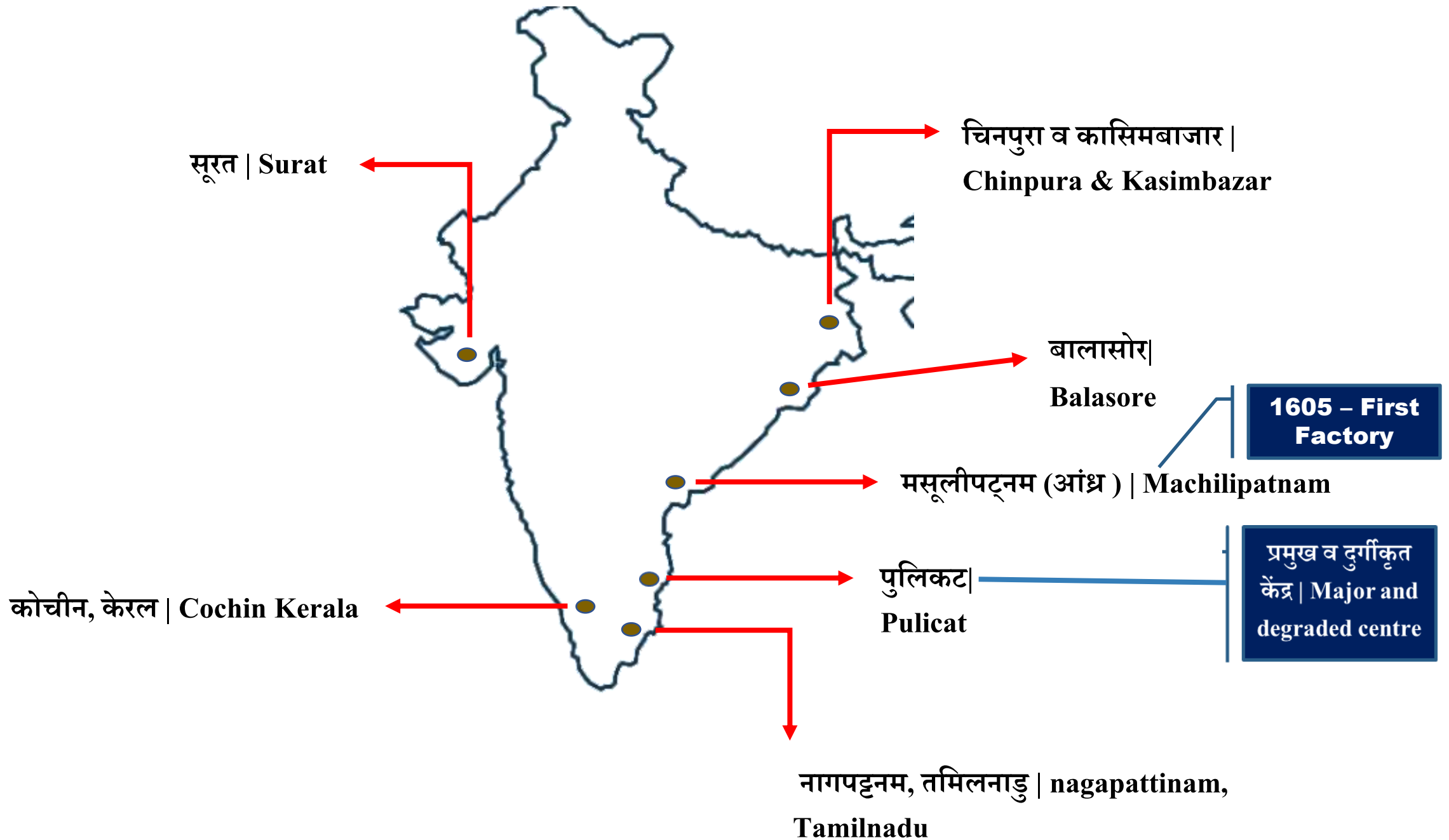
- **1602 :-** The Dutch Parliament granted the company a 21-year eastern trade monopoly rights
- **Objective :-** Make profit by asian spice and textile trade
- **Other characteristics :-**
 - ⊕ Emphasis on Indonesia (Spice Island) more than India
 - ⊕ Made India the center of textile trade
 - ⊕ More trade on India's Coromandel Coast
 - ⊕ Indian Headquarters - Pullicat



Amsterdam VOC HQ



The "United East India Company", or "United East Indies Company" (also known by the abbreviation "VOC" in Dutch) was the brainchild of [Johan van Oldenbarnevelt](#), the leading statesman of the Dutch Republic.



2) डचों का पुर्तगालियों से संघर्ष

■ **कारण :-** व्यापारिक प्रतिस्पर्धा



1. 1602 ई में डचों ने पुर्तगालियों को बंटम के निकट युद्ध में परास्त किया
2. 1605 ई में डचों ने पुर्तगालियों से अम्बोइना छीन लिया
3. 1619 ई में उन्होंने जकार्ता पर अधिकार कर लिया और डच राजधानी बटाविया का निर्माण किया
4. 1639 ई में उन्होंने गोवा की नाकेबंदी की
5. 1641 ई में मलक्का पर अधिकार कर लिया
6. 1658 में श्रीलंका में पुर्तगालियों की बस्तियों पर अधिकार कर लिया

3) डच व्यापार का विस्तार

- 1) पुर्तगालियों के प्रभाव को समाप्त करके डचों ने मसाले के व्यापार पर एकाधिकार कर लिया
- 2) पूर्वी द्वीपसमूह (इंडोनेशिया) में भारत के सूती कपड़े की और भारत में पूर्वी मसालों की अच्छी खपत थी
- 3) वे भारत में पूर्वी द्वीपसमूह से मसाले, चन्दन की लकड़ी, कालीमिर्च, जापान से तांबा और चीन से रेशमी वस्त्र लाते थे
- 4) इसी प्रकार वे भारत से पूर्वी द्वीपसमूह को अनेक चीजों का निर्यात करते थे जैसे - नील, अफीम, सूती वस्त्र, रेशम, शोरा और चावल
- 5) इस व्यापार से डचों को एक लाभ यह था कि उन्हें सोना खर्च नहीं करना पड़ता था, अदला-बदली के आधार पर ही व्यापार चलाया जा सकता था

2) Dutch struggle with Portuguese

Reason :- Trading competition



1. In 1602, Dutch defeated Portuguese in the battle near Bantam.
2. In 1605, Dutch took Amboina from Portuguese.
3. In 1619, he took control of Jakarta and built Dutch capital, Batavia.
4. Blocked Goa in 1639 AD.
5. Captured Malacca in 1641 AD
6. Captured Portuguese settlements in Sri Lanka in 1658

3) Expansion of Dutch business

- 1) Dutch monopolized spice trade by eliminating the Portuguese influence.
- 2) Good consumption of cotton cloth from India in the eastern archipelago (Indonesia) and eastern spices in India
- 3) They brought spices from the eastern archipelago to India, sandalwood, black pepper, copper from Japan and silk from China.
- 4) Similarly, they exported many things from India to the eastern archipelago such as indigo, opium, cotton, silk, saltpetre and rice.
- 5) An advantage to the Dutch from this trade was that they did not have to spend gold, trade could be carried out only on the basis of exchange.

5) प्रमुख व्यापारिक केंद्र –

- पुलीकट (1610ई)
- सूरत (1616ई)
- विमिलिपट्टम (1641ई)
- चिनसुरा (1653ई)
- कासिमबाज़ार (मुर्शिदाबाद के निकट)
- बालासोर
- पटना
- नेगापट्टम (1658)
- कोचीन (1663ई)

4) डचों का पतन || Decline of Dutch

1) बेदरा (कर्नाटक का युद्ध) 1759



2) पतन के कारण :-

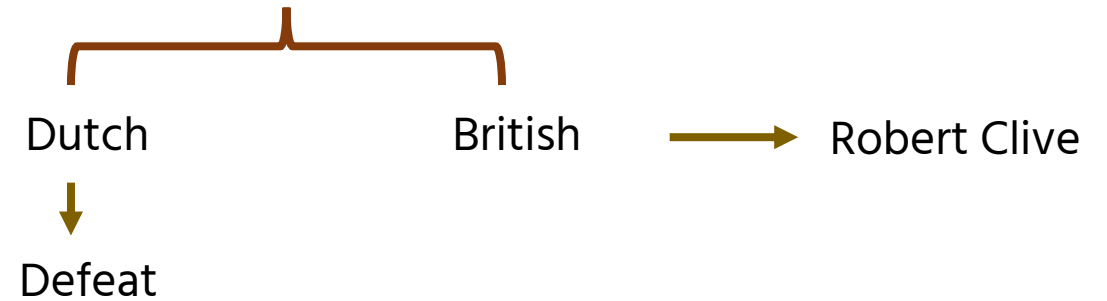
- डच कंपनी में सरकार का ज्यादा हस्तक्षेप
- अंग्रेजों का कुशल नेतृत्व तथा सशक्त नौसेना
- साधनों का अभाव
- डच कम्पनी के अधिकारियों का कम वेतन
- दक्षिण पूर्वी एशिया के मसाला द्वीपों की अपेक्षा भारत पर कम ध्यान
- यूरोप में ब्रिटेन तथा फ्रांस से संघर्ष

5) Major trading center –

- Pulicat (1610E)
- Surat (1616 AD)
- Vimalipatam (1641 AD)
- Chinsurah (1653 AD)
- Kasimbazar (near Murshidabad)
- Balasore
- Patna
- Negapatam (1658)
- Cochin (1663 AD)

4) Decline of Dutch

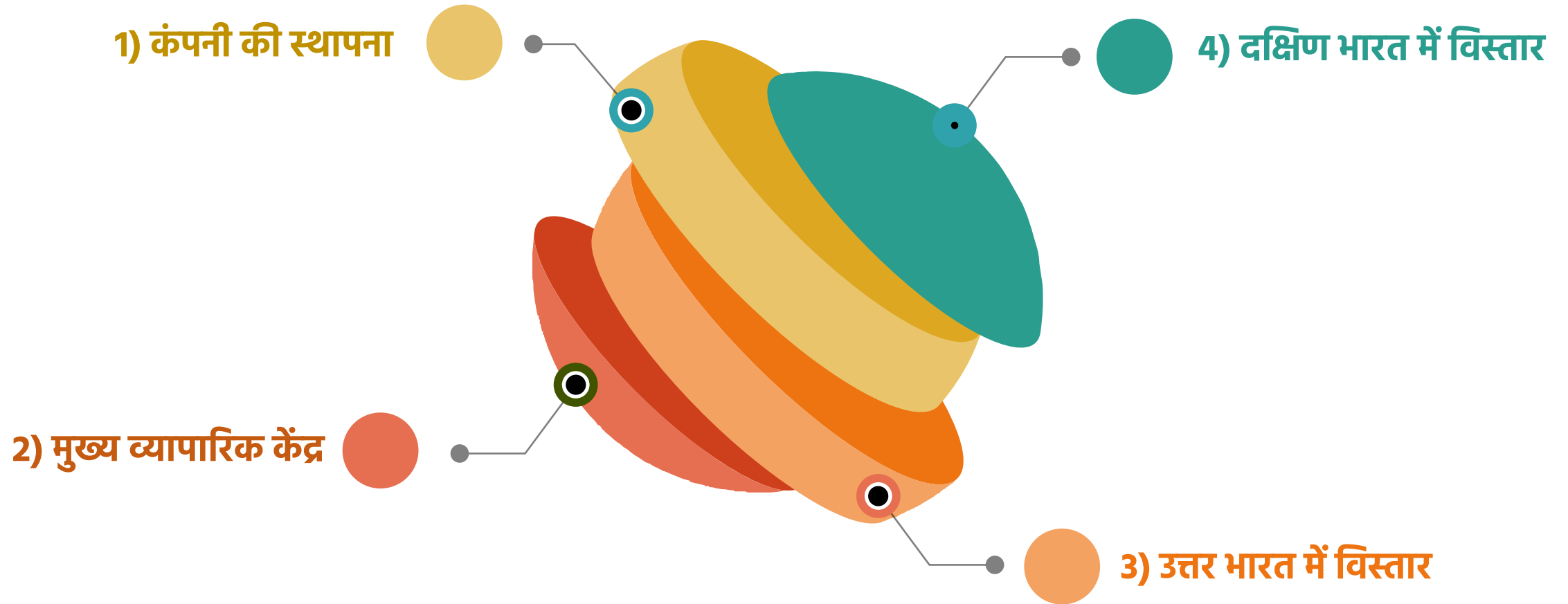
1) Bedra (Battle of Carnatic) 1759



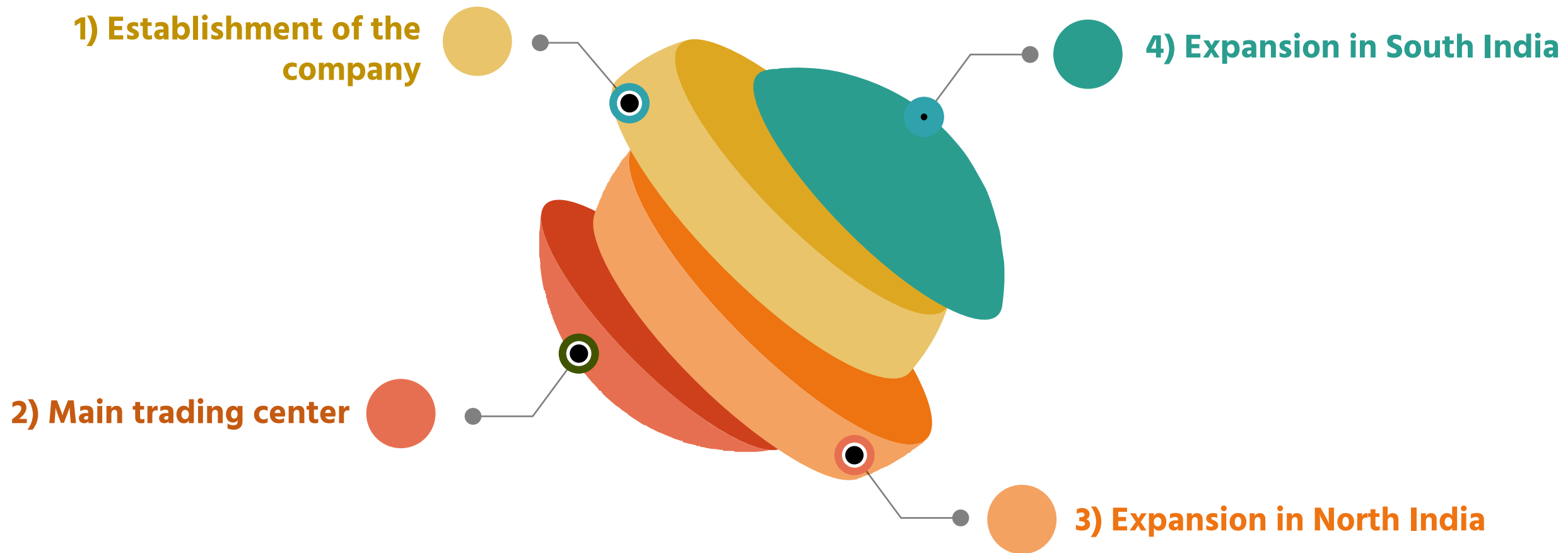
2) Reasons of the fall :-

- More government interference in the Dutch company
- Efficient leadership of the British and a strong navy
- Lack of resources
- Low salary of dutch company's executives
- Less attention on India than spice islands of South East Asia
- Conflict with Britain and France in Europe

6) अंग्रेज || Britisher



6) Britisher



1588

- स्पेन और पुर्तगाल की नौसेना (आरमेडा) को अंग्रेजों ने हराया

1597

- जॉन मिलडेन हॉल स्थल मार्ग से भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज

1600

- गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडिया की स्थापना

1600

- ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने कंपनी को पूर्वी व्यापार हेतु 15 वर्षों का एकाधिकार दिया

1608

- कैप्टन हॉकिंस रेड ड्रैगन नामक जहाज से सूरत पहुंचा

1609

- महाराजा जेम्स प्रथम ने पूर्वी व्यापारिक एकाधिकार को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाया

1611

- दक्षिण में मसूलीपट्टनम में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना

1612

- अंग्रेजों तथा पुर्तगालियों के मध्य स्वैली होल का युद्ध

1613

- जहांगीर ने अंग्रेजों को सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति दी

1615

- जेम्स प्रथम ने टॉमस रो को जहांगीर से मिलने भेजा

1632

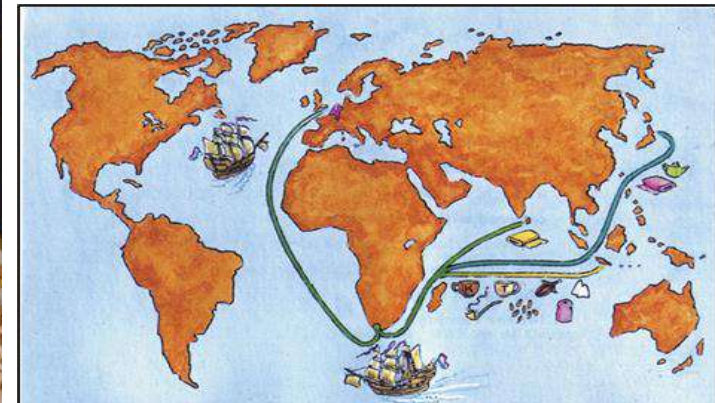
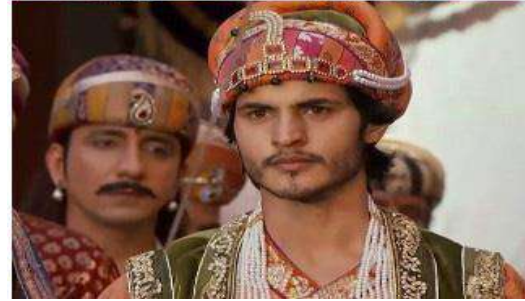
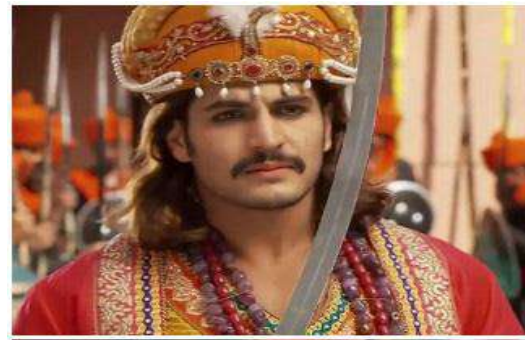
- गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा सुनहरा फरमान दिया गया

1633

- पूर्वी भारत में अंग्रेजों ने अपना पहला कारखाना उड़ीसा में खोला

1639

- अंग्रेजों ने चंद्र नगर के राजा से मद्रास को पट्टे पर लिया



1588

- The Spanish and Portuguese Navy (Armeda) were defeated by the British

1597

- John Mildenhall first Englishman to come to India by land route

1600

- Establishment of Governor and Company of Merchants of London Trading into the East Indies

1600

- Britain's Queen Elizabeth granted the Company a 15-year monopoly on Eastern trade

1608

- Captain Hawkins reached Surat by a ship called Red Dragon

1609

- King James I extended the Eastern trading monopoly for indefinite time.

1611

- Establishment of the first factory at Masulipatnam in the South

1612

- Battle of Swally (suvali) between the British and the Portuguese

1613

- Jahangir allowed the British to open a factory in Surat

1615

- James I sent Thomas Roe to meet Jahangir

1632

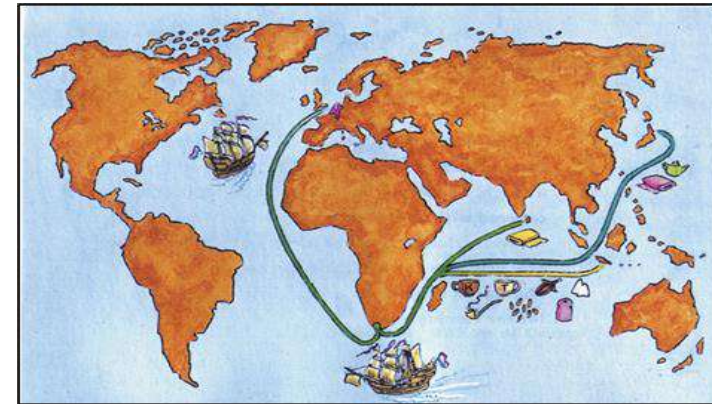
- Golden decree given by the Sultan of Golconda

1633

- The British opened their first factory in Orissa in Eastern India.

1639

- The British leased Madras from the Raja of Chandra Nagar.



1640

- मद्रास में फोर्ट सेंट जॉर्ज की स्थापना

1651

- ब्रिजमैन द्वारा हुगली में फैक्ट्री की स्थापना

1667

- औरंगजेब ने अंग्रेजों को बंगाल में व्यापार करने हेतु फरमान जारी किया

1661

- चार्ल्स द्वितीय ने कंपनी को मुद्रा, न्याय और संधि का अधिकार दिया व गवर्नर नियुक्त करने का अधिकार भी मिला

1662

- चार्ल्स द्वितीय का पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह

1668

- चार्ल्स द्वितीय ने 10 पौंड वार्षिक किराए पर कंपनी को बम्बई दिया

1677

- गेराल्ड अंगियार ने मुंबई नगर की नींव डाली

1686

- औरंगजेब ने अंग्रेजों को हराया जिस कारण उन्हें फुल्टा द्वीप जाना पड़ा

1687

- मुख्यालय सूरत से मुंबई लाया गया

1698

- बंगाल के सूबेदार अजीमुशान ने अंग्रेजों को कालिकाता, सुतानती और गोविंदपुर की जमीनदारी दी

1700

- जॉब चरनॉक ने कोलकाता की स्थापना की तथा फोर्ट विलियम भी बनाया

1715

- जॉन शर्मन के नेतृत्व में ब्रिटिश मंडल मुगल बादशाह फर्रुखसियर से मिला (डॉक्टर विलियम हैमिल्टन)

1717

- फर्रुखसियर द्वारा शाही फरमान या मैग्राकार्टा जारी किया गया



St. George Fort in Chennai



1640

- Establishment of Fort St. George in Madras

1651

- Establishment of factory in Hooghly by Bridgeman

1667

- Aurangzeb issued a decree (Farman) to the British to trade in Bengal

1661

- Charles II gave company right of currency, justice, treaty and to appoint a governor.

1662

- The marriage of Charles II to the Portuguese princess Catherine

1668

- Charles II gave Bombay to the Company at an annual rent of £10

1677

- Gerald Aungier laid the foundation of the city of Mumbai

1686

- Aurangzeb defeated the British due to which he had to go to Fulta Island

1687

- Headquarters moved from Surat to Mumbai

1698

- Subedar Ajimushshan of Bengal gave land holdings of Kalikata, Sutanuti and Govindpur

1700

- Job Charnock founded Kolkata and also built Fort William

1715

- British delegation under leadership of John Sherman met Mughal emperor Farrukhsiyar (Dr. William Hamilton)

1717

- The royal decree or Magna Carta issued by Farrukhsiyar



St. George Fort in Chennai



1813

- कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को कम किया गया

1833

- कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार की समाप्ति

1858

- कंपनी के प्रशासनिक एकाधिकार की समाप्ति

1874

- ईस्ट इंडिया कंपनी को बंद किया गया



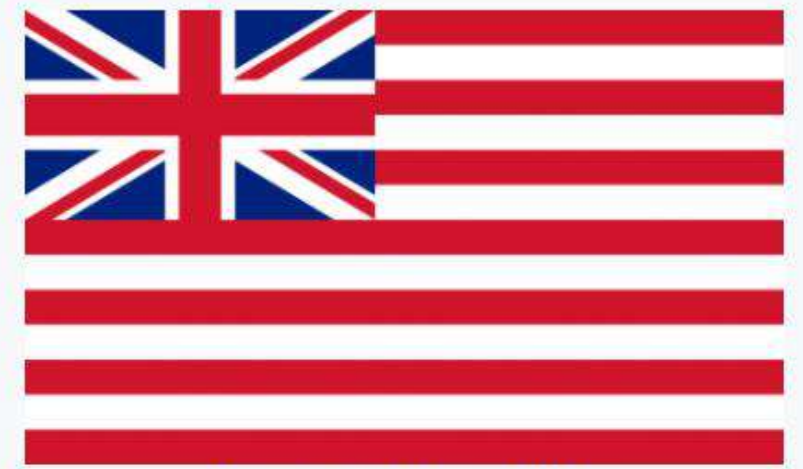
Robert Clive became the first British Governor of Bengal after he had instated Mir Jafar as the Nawab of Bengal



An East India Company coin, struck in 1835



An English soldier apologising to Emperor Aurangzeb.



Company flag (1801)



Coat of arms (1698)

1813

- Trading monopoly of Company was reduced

1833

- Trading monopoly of Company was ended.

1858

- End of the administrative monopoly of the company

1874

- East India Company was closed



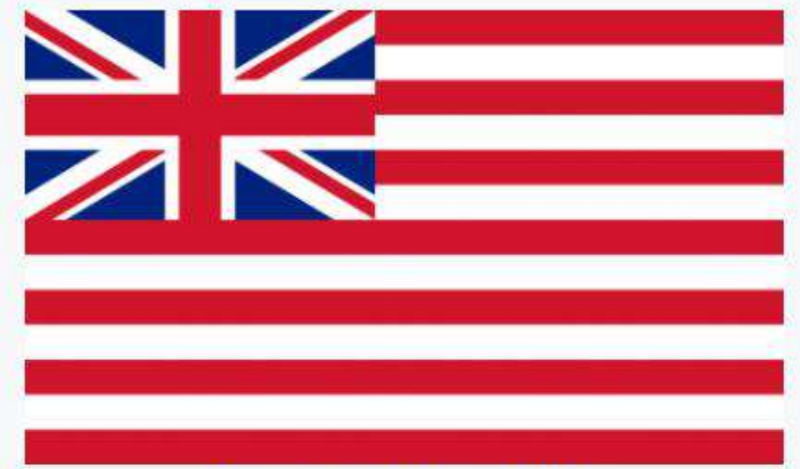
Robert Clive became the first British Governor of Bengal after he had instated Mir Jafar as the Nawab of Bengal



An East India Company coin, struck in 1835



An English soldier apologising to Emperor Aurangzeb.



Company flag (1801)



Coat of arms (1698)

1) कंपनी की स्थापना || Establishment of company

Governor and Company of Merchants of London Trading into the East-Indies

गठन :-
31 दिसंबर 1600

संस्थापक :-
जॉन वॉट व थॉमस
स्मिथ

प्रथम गवर्नर :-
थॉमस स्मिथ

निजी कंपनी -
निदेशक मंडल(24)
द्वारा संचालित

प्रथम केंद्र :-
मसूलीपट्टनम

1600 में महारानी
एलिजाबेथ द्वारा 15
वर्ष व 1609 में राजा
जेम्स प्रथम द्वारा
अनिश्चित काल हेतु
पूर्वी व्यापारिक
एकाधिकार

1) भारत में :-
■ अकबर (1542-1605)
■ जहाँगीर (1605-1625)

2) उद्देश्य :- एशियाई व्यापार द्वारा लाभ अर्जन

3) अन्य तथ्य :-

- 1) दक्षिण भारत में प्रथम केंद्र - मसूलीपट्टनम
- 2) प्रारंभिक मुख्यालय - सूरत



Sanjiv Mehta

1) Establishment of company

Governor and Company of Merchants of London Trading into the East-Indies

Formation :-
31 December
1600

Founded by :-
John Watt and
Thomas Smith

First Governor :-
Thomas Smith

Private
Company - Run
by Board of
Directors (24)

First Center :-
Machilipatnam

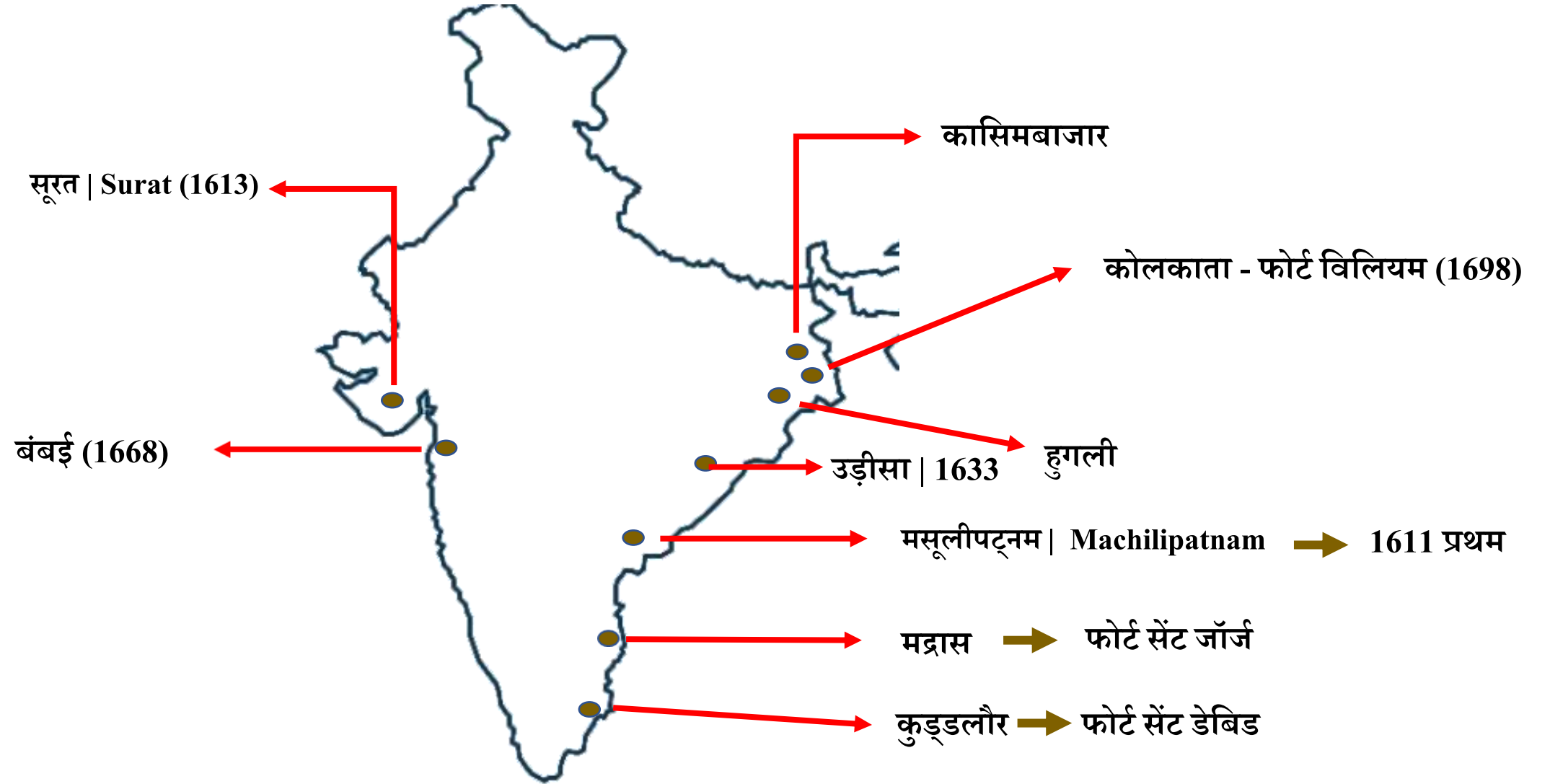
Monopoly for
trading in East
for 15 years by
Queen
Elizabeth in
1600 and for
indefinitely by
King James I in
1609

- 1) In India :-
- Akbar (1542-1605)
 - Jahangir (1605-1625)
- 2) Objective :- Profit making by Asian trade.
- 3) Other facts :-
- 1) First center in South India - Machilipatnam
 - 2) Initial Headquarter - Surat

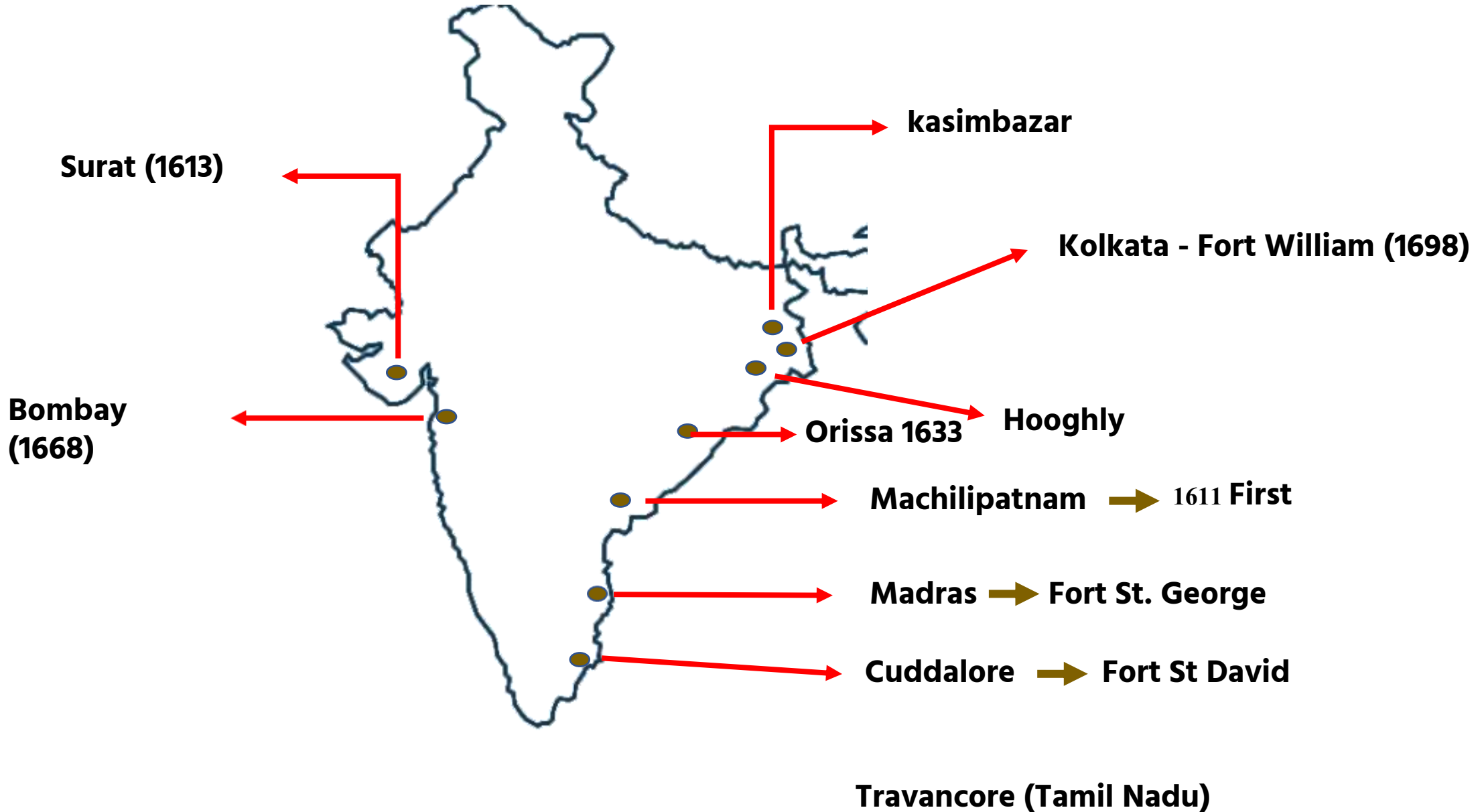


Sanjiv Mehta

2) मुख्य व्यापारिक केंद्र || Major trading centre



2) Major trading centre



3) उत्तर भारत में विस्तार || Expansion to North India

3.1) जहांगीर काल
(1605-1625)

3.2) औरंगजेब काल
(1658-1707)



3) Expansion towards North India

3.1) Jahangir Reign
(1605-1625)

3.2) Aurangzeb Reign
(1658-1707)



3.1) जहांगीर काल (1605-1625)

1) कैप्टन विलियम हॉकिंस



- 1) 24 अगस्त 1608 को मुगल बादशाह जहांगीर के दरबार में आने वाला अंग्रेज व्यापारी(आगरा)
- 2) तुर्की व फारसी में संवाद
- 3) प्रभावित होकर मुगल सम्राट ने 400 का मनसब व इंग्लिश खां की उपाधि दी
- 4) हालांकि पुर्तगाली वर्चस्व के कारण व्यापारिक वार्ता में असफल



2) स्वाली का युद्ध(1612)



- 1) **स्थान :-** सूरत के निकट
- 2) पुर्तगाल नौसेना व गुजरात गवर्नर बनाम अंग्रेज
- 3) **अंग्रेजी कमांडर :-** टॉमस वेस्ट
- 4) **परिणाम :-** पुर्तगालियों की हार तथा 1613 में अंग्रेजों को सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति मिली



3) सर टॉमस रो (1615-1619)



- 1) 1615 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में जहांगीर के दरबार में आया
- 2) **उद्देश्य :-** भारत में व्यापारिक विस्तार
- 3) **परिणाम :-** मुगल साम्राज्य के प्रदेशों में फैक्ट्री खोलने की अनुमति



3.1) Jahangir Reign (1605-1625)

1) Captain William Hawkins



- 1) English merchant visiting the court of Mughal emperor Jahangir on 24 August 1608 (Agra).
- 2) Conversation in Turkish and Farsi
- 3) Impressed, Mughal emperor gave a mansab of 400 and the title of English Khan.
- 4) However, trade negotiations failed due to Portuguese domination.



2) Battle of Swally (1612)



- 1) **Location** :- Near Surat
- 2) Portugal Navy and Gujarat Governor Vs British
- 3) **English Commander** :- Thomas West
- 4) **Result** :- The defeat of the Portuguese and in 1613 the British got permission to open a factory in Surat.



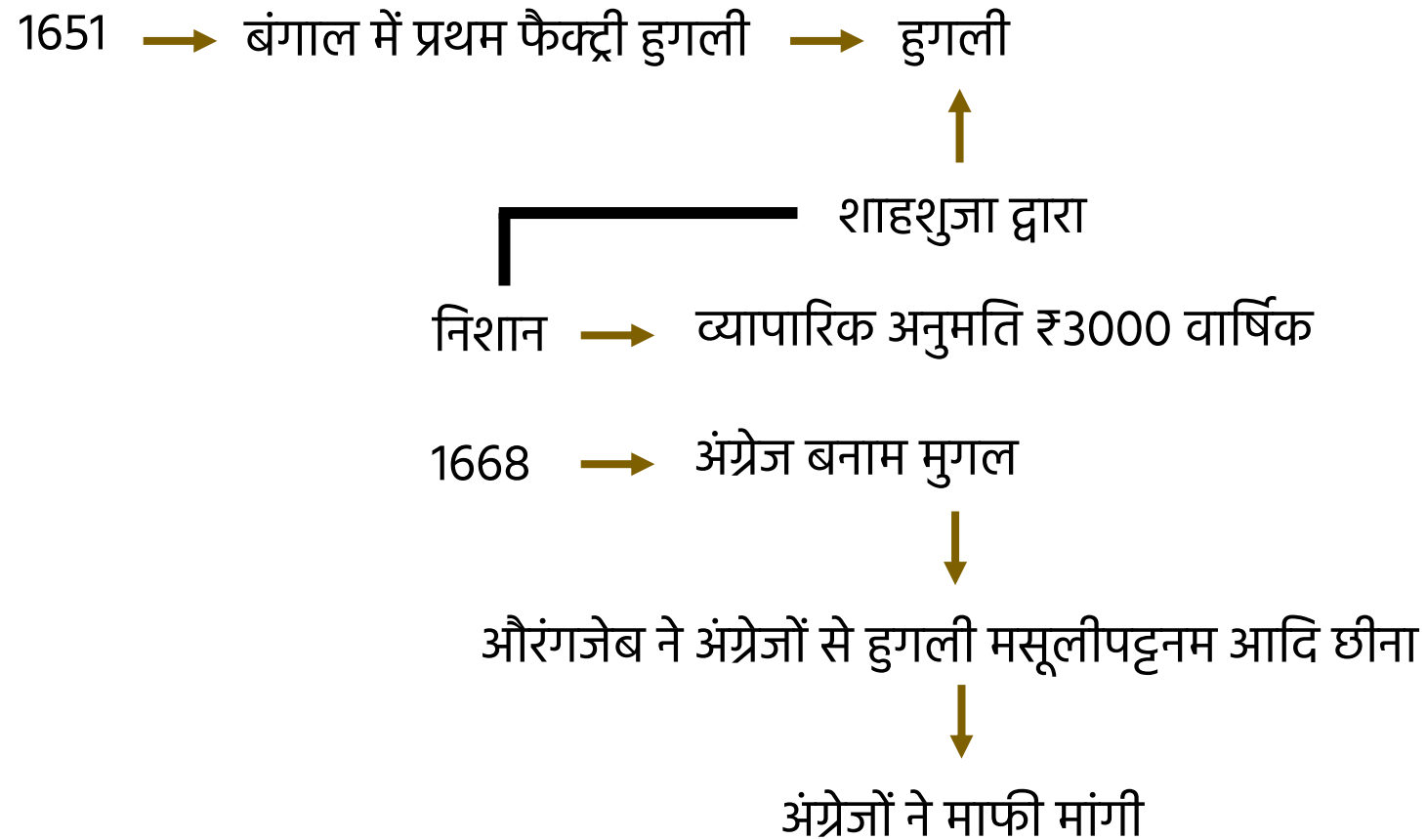
3) Sir Thomas Roe (1615-1619)



- 1) Came to Jahangir's court in 1615 as an ambassador of British Emperor James I
- 2) **Objective** :- Trade expansion in India
- 3) **Result** :- Permission to open factories in the territories of the Mughal Empire



3.2) औरंगजेब काल (1658-1707)



3.2) Aurangzeb Reign (1658-1707)

1651 → First factory Hooghly in Bengal → Hooghly



by shah-shuja

Nishan → Trade Permit ₹3000 p.a.

1668 → English vs Mughal



Aurangzeb snatched Hooghly Masulipatnam etc. from the British.



The British apologized



1698

→ बंगाल के तीन गांव

- कालीकट
- सूतानती
- गोविंदपुर

जमीनदारी

जॉब चरनॉक के द्वारा कलकाता फोर्ट विलियम की स्थापना

1717

→ फरुखसियर

→ शाही फरमान

- ₹3000 वार्षिक कर - बंगाल
- ₹10000 वार्षिक कर - सूरत
- बम्बई में कंपनी द्वारा ढाले गए सिक्कों को संपूर्ण मुगल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल

जॉन सरमन मिशन व डॉक्टर हैमिल्टन

मैग्नाकार्टा ऑफ कंपनी

नोट → स्वर्ण फरमान → गोलकुंडा

500 → 1632

1698

→ Three villages of bengal

- Kalikata
- Sutanuti
- Gobindapura

→ Zamindari

↓
Establishment of Calcutta Fort William by Job Charnock

1717

→ Faruksiyar

→ Royal decree

- ₹3000 Annual Tax - Bengal
- ₹10000 Annual Tax - Surat
- In Bombay, the coins minted by the Company were allowed to run throughout the Mughal state.

↑
John Sarman Mission and Doctor Hamilton

↓
Magna Carta of Company

Note → Golden decree → Golkonda

↓
500 → 1632

4) दक्षिण भारत में विस्तार || Expansion to South India

- 1) 1639 → फ्रांसीस डे ने चंद्रगिरी के राजा से मद्रास लिया
↓
फोर्ट सेंट जॉर्ज - दक्षिण व्यापार केंद्र
- 2) 1661 → ब्रिटेन राजकुमार चार्ल्स प्रथम व पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन ऑफ ब्रेगेन्जा का विवाह
↓
पुर्तगाल → ^{Gift}_{Bombay} → ब्रिटेन
↓ 10 पाउंड किराया
1668 → EIC
↓
1. गेराल्ड ओगियर द्वारा मुंबई स्थापना
2. 1687 → सूरत से मुंबई केंद्र बना

4) Expansion to South India

